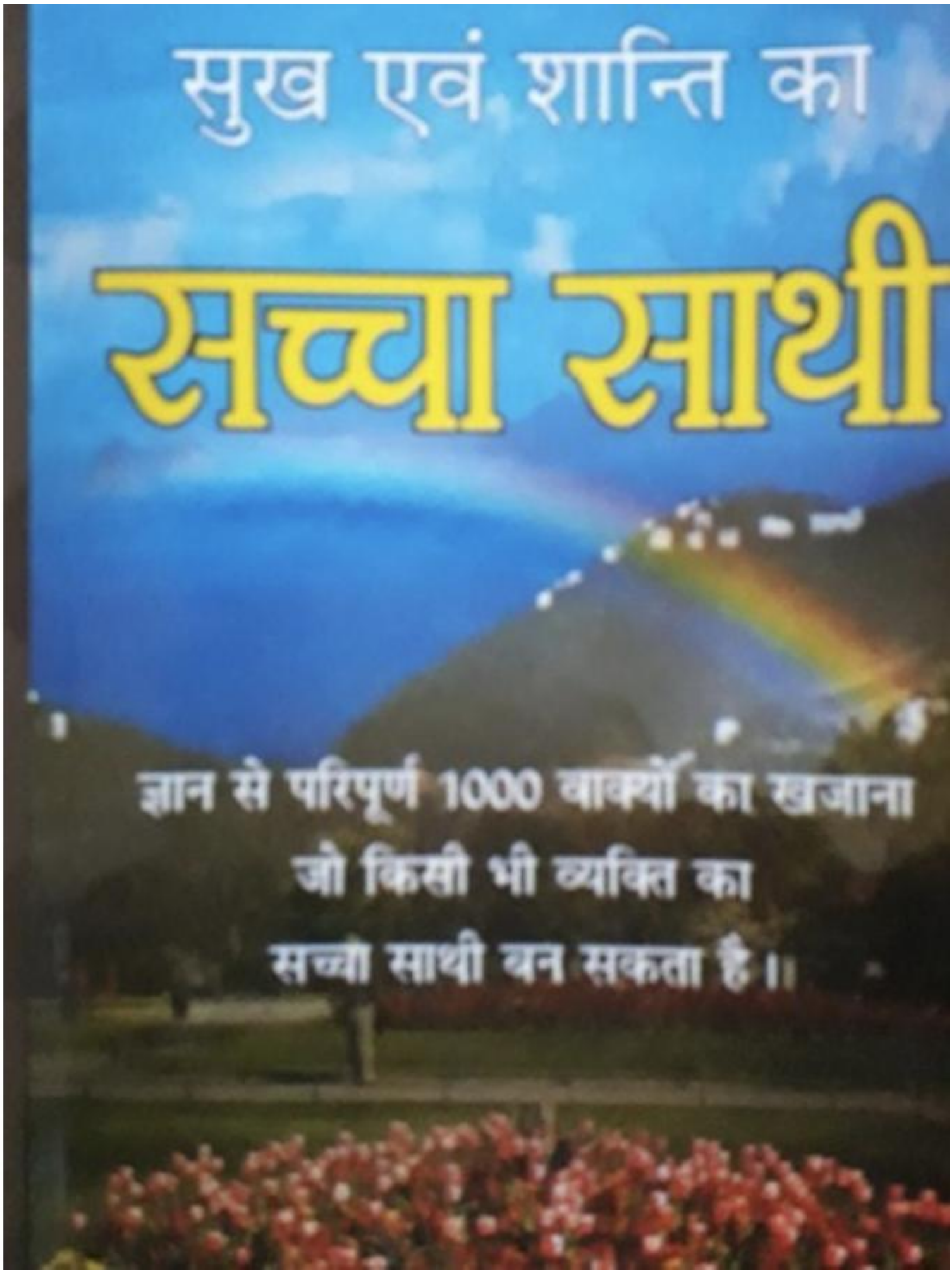
सुख एवं शान्ति का
सच्चा साथी
ज्ञान से परिपूर्ण 1000 वाक्यों का खजाना
जो किसी भी व्यक्ति का
सच्चा साथी बन सकता है।।

१. प्रेम - भक्ति

१. ईश्वर की महिमा को प्राणी कैसे समझ सके? वह पहाड़ तो यह राई, वह सागर तो यह बूंद, वह सूर्य तो यह किरन, वह भरपूर भण्डार तो यह एक नाम मात्र कण!

२. नेत्र वे कहे जायें, जो सच्चे प्रियतम प्रभु के मिलने का मार्ग देखते हैं। जीभ वह कही जाय, जो प्रभु के नाम लेने में प्रसन्न होती है!

३. हे देव! तूने एक हाथ में ढाल दी है और दूसरे हाथ में तलवार, किन्तु तूने दोनों हाथ इस प्रकार बांध दिये हैं कि सब कुछ कर सकने वाला मनुष्य भी मौत के आगे कुछ नहीं कर सकता!

४. जब से आपका दर्शन किया, तब से संसार के आश्चर्यों को परखने के लिए सर्राफ बन गया!

५. हे तीन लोकों के सूर्य! मैं तो तुम्हारी किरन हूं। वियोग का शोक तो केवल मन का भ्रम है!

६. तुम स्वयं छिपकर बैठे हो, परन्तु खेल कैसा न मनोहर रचा है! तुम स्वयं बेरंग हो, लेकिन रंग कैसे-कैसे न मनमोहक रचे हैं!

७. पेड़ का प्रत्येक पत्ता-पत्ता चुपचाप तेरा गुण-गान कर रहा है। उद्यान का प्रत्येक पुष्प ध्यान पूर्वक तुम्हारी आवाज़ सुन रहा है।

८. दिल है तुम्हारे बैठने का दरबार और प्रेम है उस दरबार में प्रवेश करने का द्वार।

९. जब दिल को खोजा तो दुनिया में ईश्वरीय बग़ीचे का दृश्य देखा। जब भीतर का नेत्र खोला, तब प्रत्येक वस्तु में ईश्वर की ज्योति दृष्टिगोचर हुई।

१०. आंखों में है तुम्हारी ज्योति और हृदय में है तुम्हारा आनन्द। आकाश से पाताल तक तुम्हारा सारा दृश्य देख रहा हूं।

११. परमात्मा के अलावा और है कौन? यह "मैं मैं" की बक बक क्यों करता है? जो परमात्मा का न हुआ, वह अन्य किसी का भी नहीं हो सकता।

१२. भक्ति के गौरव की मिट्टी के मन्दिर को क्या खबर? इसमें तो एक एक कदम पर मन्दिर है और एक एक पत्थर ठाकुर है।

१३. हे प्रभु! तू मेरे अंग अंग में प्रवेश कर और रोम रोम को अपने प्रकाश से भर दे तो तुम्हारे पथ-प्रदर्शन से मेरे समस्त कार्य ईश्वरीय कर्म बन जायें।

१४. दुनिया को देख देखकर दिल बेईमान होने लगता है, अफसोस! यह आंख, जो प्रकाश का घोंसला है, वही मनुष्य एवं परमात्मा के बीच में पर्दा बनकर खड़ी है।

१५. हे प्रभु! मेरा पैर बार बार लड़खड़ाता रहता है, तुम्हारी दया की दृष्टि ही है मेरे लिये सच्ची शक्ति!

१६. हे प्रियतम! यदि तुम कहो तो मैं अपनी जबान खोलकर बोलूं, लेकिन तुम्हें देखने से मन बेबस होकर शान्ति के आनन्द में मन मग्न हो जाता है।

१७. तुम्हारे प्रेम का चश्मा आंखों पर चढ़ाकर, ऊपर नीचे, इधर उधर देखा। क्या देखता हूं कि कण-कण तुम्हारे दर्शन का दर्पण बन खड़ा है।

१८. इस अनेकता में, जहां तहां हर रंग में, तू ही तू खड़ा है। इतने हैं तुम्हारे रंग और रूप, तो भी आश्चर्य यह है कि तुम्हें "एक" कहते हैं।

१९. ज्ञान है नींव, कर्म है भवन की दीवारें तथा भक्ति है भवन का सुन्दर कमरा। हे भाई, उस आकर्षक महल में कुशल पूर्वक रहो।

२०. तन और मन दो अस्त्र हैं, जो परमात्मा ने बनाये हैं। निर्माता को ही उनके काम में लाने का

पूरा ज्ञान है। तब तन और मन परमात्मा को अर्पण करो तो दोनों से सुन्दर से सुन्दर कार्य सिद्ध हों।

२१. अर्जुन का रथ भगवान श्री कृष्ण ने चलाया, तभी महाभारत युद्ध में अर्जुन ने विजय प्राप्त की। यदि तुम भी अपने मन का रथ भगवान को अर्पण कर दो तो संसार के संग्राम में सदैव विजय प्राप्त करोगे।

२२. परमात्मा को अपनी माता समझ और स्वयं को उसका अबोध बालक। विश्वास करो तो यह सारा संसार तुम्हारा घर बन जाय और संसार की सब वस्तुएं तुम्हारे मनोरंजन के लिये खिलौने बन जायं।

२३. जैसे हिप्नाटिजिम (मिसमेरीजिम) से प्रभावित होकर आदमी दुनिया से बेखबर हो जाता है और केवल अपने आमिल (मिसमेरीजिमकर्त्ता) के आदेश को ही सब कुछ समझकर उसके अनुसार वैसे का वैसा अमल (व्यवहार) करता है। वैसे हे प्रभु! तू मुझे वशीभूत (मिसमेराईज़) कर तो समस्त दुनिया से बेखबर होकर केवल तुम्हारे आज्ञा पालन में अटल रहूं।

२४. ईश्वर की बंदगी हर वस्तु, हर समय, हर जगह हो रही है, यही ज्ञान सच्ची भक्ति है। भला उसके अलावा है कौन? हर चीज़ में ईश्वर की प्रभुता का संसार जगमगा रहा है।

२५. प्रत्येक तन माला है। प्रत्येक विचार मनका है। बुद्धिमान के लिए विचार का परिवर्तन होना ही भक्ति है। प्रत्येक हर समय, हर जगह भक्ति में मग्न है, यही है असली दृष्टि और असली हकीकत।

---

२. सत्गुरु

१. हर विद्या और हर कला के सीखने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। जो सत्य की शिक्षा है और सत्य में स्थिर बनाकर खड़ा करता है, वही सत्गुरु है।

२. जो दिल के बुझे हुए दीपक को जला कर भीतर बाहर का अन्धकार नष्ट करता है, उसका अहसान उम्र भर गाया जाय तो भी कम है।

३. हर वस्तु की खरीद के लिए धन की आवश्यकता होती है, किन्तु जो चीज सत्गुरुओं से मिलती है, उस के लिए केवल श्रद्धा रूपी धन की आवश्यकता है।

४. ज्योति की लौ को सौ बार तलवार चलाने से कुछ भी पीड़ा पहुंचाई नहीं जा सकती, तब। ज्ञान के प्रकाश को कौन नष्ट कर सकता है? वह अमर ज्योति तुम्हारे हृदय में जल रही है। सत्गुर का संग करके दर्शन करो तो तुम अमर हो जाओ।

५. दुनिया में हर प्रकार के विद्वान, पण्डित, तत्ववेत्ता, कलाकार आदि आसानी से मिल सकते हैं; किन्तु सत्गुरुओं का मिलना अत्यन्त कठिन है।

६. यद्यपि हर जगह सत्संग होते हैं और गुरु दृष्टिगोचर होते हैं तो भी संसार में ये दो वस्तुएं दुर्लभ हैं: एक सत्संग, दूसरा सत्गुरु।

७. दुनिया में सत्गुरु के समान दातार नहीं। क्यों कि उसका दान पाकर अन्धा (अज्ञानी) भी नूर वाला (ज्ञानी) बन जाता है।

८. शिक्षा वह कोष है, जिसके देने वाले प्राय: दरिद्र और लेने वाले सदैव भूखे। देने वाले इसलिए दरिद्र हैं कि विद्या की अपार और बेअन्त निधि से कठिनाई से कौड़ियां ही उन्होंने प्राप्त की हैं और लेने वाले इसलिये भूखे हैं, क्योंकि प्यासे की प्यास कभी भी तृप्त होने की नहीं।

९. जो सत्गुरु को अपना आत्म - स्वरूप करके देखता है, वह सत्गुरु से सच्चा लाभ प्राप्त करता है। जो सत्गुरु को अपने से अलग अथवा दूर समझता है, वह सत्गुर से पूरा लाभ प्राप्त नहीं कर सकता।

३. नाम स्मरण

१. नाम स्मरण को इस प्रकार चिपक जा, जैसे डूबने वाला मनुष्य तुंबी से चिपक जाता है। यही तो दुख सागर दुनिया से पार लगाने वाली तुंबी है।

२. दुख और व्याकुलता तभी मन में घुसकर आते हैं, जब परमात्मा विस्मृत होते हैं। प्रभु को याद करने का सरल से सरल साधन यह है कि मन में हर समय उसके नाम की धुन चालू रखी जाय।

३. अखण्ड नाम-स्मरण से वह शक्ति आ जाती है, जिसके द्वारा मन की प्रत्येक उलझन और विपत्ति को क्षण भर में मिटाया जा सकता है।

४. मन में नाम का ध्यान धरो। उस बरकत के निकट दुनिया की कोई विपत्ति नहीं आ सकेगी।

५. परमात्मा के सभी नाम समान हैं। विश्वास रखकर किसी भी नाम में चित्त लगाने से सच्ची विजय और शोभा प्राप्त की जा सकती है।

६. सभी दर्दों, कठिनाईयों और रोगों से छूटने का एक ही अचूक साधन है नाम स्मरण। श्री गुरु अर्जुनदेव जी ने सच फर्माया है: सर्व रोगों की औषधि 'नाम'।

—•—

४. मानव और मानवता

१. जवाहर का मूल्य उसके पानी पर आश्रित है, मानव के मूल्य का आधार है उसकी मानवता पर।

२. मन्दिर और मस्जिद में क्या खोजते हो? जो कुछ चाहिये, वह मनुष्य के भीतर खोजिये।

३. लोग अप्सराओं और परियों को सराहते हैं, किन्तु मैं सराहता हूं मनुष्य को।

४. मनुष्य है तो मिट्टी की मुट्ठी, किन्तु मानवता उसे देवताओं से भी ऊंचे पद पर पहुंचाती है।

५. ईश्वर को जब अपनी प्रकृति दिखाने की इच्छा हुई, तब अपने सौन्दर्य प्रकट करने के लिए मनुष्य को मनका (मोती) बनाया।

६. जिस ज्योति से सूर्य चन्द्रमा चमकते हैं, तारे टिमटिमाते हैं, बिजलियां चमचमाती हैं और सभी चीजें झलकती हैं, वह ज्योति जो मनुष्य के शरीर रूपी शमादान में जल रही है।

७. मैंने पूछा कि मानव क्या है? कहा कि 'कान' क्योंकि कानों द्वारा जो मनुष्य ने सुना है, यदि वह सब कुछ भुला दे तो मनुष्य एवं पशु में कोई भी भेद न रहे।

८. मनुष्य जो कुछ कर सकता है, वह कोई अन्य नहीं कर सकता, परन्तु देखो तो सही मनुष्य बिचारा क्या कर सकता है।

९. मानव यदि स्वयं को आत्मा प्रतीत करे तो द्वेष रहित होकर उसे रहना चाहिये। यदि अपने को बंदा समझे तो आपा मिटाकर चलना चाहिये और यदि अपने को शरीर समझे तो मिट्टी की भांति उसे अभिमान रहित होकर बरतना चाहिये।

१०. मानव यदि स्वयं को समझे, तो परमात्मा रूप बन जाय, यदि अपने को पहचाने, किन्तु केवल अपने कर्मों को सुधारे तो भी देवता हो जाय और यदि इन दोनों में से कुछ भी न करे तो मिट्टी जितना मूल्य भी न हो।

११. पुष्प में तीन गुण हैं :- (१) सौन्दर्य, (२) कोमलता, (३) सुगंध। ऐ मानवीय पुष्प! तुझमें धैर्य, प्रेम और नम्रता के गुण आ जायं तो तुम स्वर्ग के पुष्प से बाज़ी ले जाओ।

१२. मनुष्य और पशु में भेद यह है कि मनुष्य बोल सकता है और पशु बोल नहीं सकता। किन्तु यदि मनुष्य सदैव मधुर बोले तो देवताओं से भी महान हो जाय।

१३. अमृत का झरना तुम्हारे भीतर है, किन्तु अफसोस कि एक बूंद के लिए तुम द्वार-द्वार पर पागलों की भाँति भटकते हो।

१४. जिसे कोई इच्छा नहीं, वह खोज किसकी करे? जो स्वयं में मग्न है, वह अन्य किसी प्रसन्नता के लिये क्यों ताके?

१५. अगर तुम्हारे मित्र तुम्हारी बातें सुनकर प्रसन्न हुए तो कौनसी बड़ी बात हुई? जब तुम्हारी बात तुम्हारे शत्रु को प्रसन्न करे, तब कहा जाय कि तुझे बोलने का ढंग आया।

१६. ऐसा मत कहो कि परमेश्वर ने मुझे यह न तिया, वह न दिया। यह पर्याप्त है कि उसने तुझे मनुष्य शरीर दिया है, जो सभी बरकतों (उन्नतियों) का भण्डार है।

१७. शरीर की प्रत्येक इन्द्रिय अमूल्य रत्नों से भी मूल्यवान है। जब तुम्हारे पास वह खज़ाना है, तब किट-किट किसकी करते हो?

१८. हे मनुष्य! तुम सारी उम्र खज़ाने की बहुत खोज में हो, परन्तु सभी देवता तुझे खोज रहे हैं कि आओ और आकर अपनी असंख्य सम्पत्ति का स्वामी बनो।

—•—

५. मूर्खता

१. मूर्ख उसे कहा जाता है, जो स्वयं काम करके फिर उस पर बैठकर पछताए कि हाय ! यह काम मैंने क्यों किया? बार-बार पछताता भी रहे, किन्तु बार-बार करता भी रहे ।

२. मूर्ख को उपदेश देना ऐसा है, जैसे अन्धे को दीपक दिखाना । जो मूर्ख को शिक्षा देता है, उसे स्वयं शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है ।

३. जो मनुष्य अपने से अधिक बुद्धिमान से वाद-विवाद करता है, इस विचार से कि दूसरे उसे बुद्धिमान समझें, वास्तव में वह मूर्खता को साबित कर रहा है ।

४. गर्म तवे पर पानी की बूंदें पड़ते ही सूख जाती है । मूर्ख का दिल गर्म तवा और शिक्षा के वचन हैं शीतल जल की बूंदें ।

५. बुरे आदमी पर अच्छी शिक्षा का प्रभाव कैसे होगा? कभी मोम से बना हुआ वृक्ष पानी देने से हरा हुआ? मूर्ख के सभी प्रश्नों का सबसे उत्तम उत्तर है "मौन ।"

६. बुद्धिमान की कठिन से कठिन बात का उत्तर देना सरल है, लेकिन मूर्ख के सरल से सरल प्रश्न का उत्तर देना भी कठिन है।

७. जिसकी बात-बात में झगड़ा और फसाद हो, उससे सौ कोस दूर भागना चाहिये।

८. आश्चर्य तो देखो कि जिनकी दृष्टि तेज़ है, उनकी आंखों पर चश्मा उल्टे ही अन्धकार करता है। सच है कि मूर्खों की महफिल में बुद्धिमान की शान भी कम हो जाती है।

९. संसार में इतने ऋषि मुनि, सन्त महात्मा और अवतार हुए हैं किन्तु मूर्खता की बीमारी ज्यों की त्यों चली आ रही है।

१०. सैकड़ों शिक्षाएं सुनकर भी मूर्ख आदमी नहीं सुधरता। कितनी भी वर्षा हो तो भी समुद्र का पानी खारे का खारा।

११. अज्ञानी मनुष्य का दिल है उस छलनी के समान, जिसमें अज्ञान रूपी छिलके रह जाते हैं और ज्ञानियों का दिल है उस छलनी के समान, जिसमें गुणों रूपी अनाज बाकी रह जाता है।

१२. नीच आदमी अच्छे पुरुष को आंसू बहाते देखकर प्रसन्न क्यों न होंगे! क्या वर्षा के दिनों में मजदूरों को दुगनी मजदूरी नहीं मिलती?

१३. मूर्ख और बुद्धिमान में केवल यह भेद है कि मूर्ख अपने दोषों को नहीं देखता और बुद्धिमान अपने दोषों को अच्छी तरह समझ सकता है।

१४. मूर्ख कितना भी हार-शृङ्गार करे, तो भी मूर्ख ही रहेगा। क्योंकि पुरुष का भेष पहिनने से कोई स्त्री पुरुष नहीं हो जायेगी।

१५. बुद्धिमान अपने राह में कांटों का ढेर देख कर, मुड़कर चला जायेगा। परन्तु मूर्ख कांटों के ढेर के ऊपर छलांग मारकर, अपने को कांटों में जाकर फंसाएगा। वैसे ज्ञानी दुनिया के मार्ग में रुकावट देखकर, दुनिया से किनारा करता है, लेकिन अज्ञानी और मूर्ख उसमें खुद को फंसाता है।

१६. कोयल के मधुर आलाप का कौए को क्या पता? बुद्धिमान की शिक्षाओं का मूर्ख को क्या कद्र?

६. कुल और कुटुम्ब

१. वह गुण अपने में उत्पन्न करो, जिससे पिता और दादाजी का नाम रोशन हो।

२. कहीं पत्थर, कहीं जवाहर; है तो दोनों ही मिट्टी की उत्पति, परन्तु गुणों का भेद है।

३. मूर्ख वे हैं, जो पीढ़ियां बताकर अपने को बड़े खानदान वाला मानते हैं लेकिन असली खानदानी उसी में है, जो गुणवान है।

४. कुल और कुटम्ब पर अभिमान करना नीचता है। मनुष्य की महिमा का आधार न कुल कुटम्ब पर है, न पद पर है परन्तु उनके गुणों पर है।

५. ईश्वर सबका पिता है और समस्त जीव घर का परिवार! वास्तविक कुटुम्ब तो यही है, अन्य सब दिल का भ्रम है।

६. बरसात के पानी की बूंद सीप में मोती हो जाती है। गुणवान मनुष्य तुच्छ वस्तु को भी मूल्यवान बना देता है।

७. सबका वास्तविक खानदान तो आकाश, वायु, धरती, जल एवं अग्नि है। सबके एक ही बाप दादा है। खानदान के छोटे बड़े का विचार बिल्कुल बे-बुनियाद है।

८. तुम्हारे असली सम्बन्धी तो हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। उनके गुण अपने में उत्पन्न करो तो उनके समान हो जाओ। आकाश का गुण ही है निर्लिप्तता। वायु का गुण है स्वतन्त्रता, अग्नि का गुण है सन्तोष, जल का गुण है मिलाप और पृथ्वी का गुण है धैर्य।

९. परिवार वह अच्छा, जहां बड़े छोटों की रक्षा करते रहें और छोटे बड़ों की सेवा करते रहें।

७. घर और घर की माता

१. कहावत है कि "अपना घर, गुरु का द्वार" जो मनुष्य अपने आचरण द्वारा इस कहावत को सच करके दिखाता है, उसका सच्चा घर है।

२. प्रेम एवं मिलाप को घर कहा जाता है, न कि झगड़े और लड़ाई को। घर की खटपट सुखी घर को भी नर्क बना देती है।

३. घर तो घर स्वामिनी। जहां घर की मालकिन नहीं है, वह घर किस काम का? घर की माता है घर का प्रकाश।

४. सुशील माता सन्तान के भाग्यों का स्थम्भ एवं सुखों की नींव है। जो बालक गुणवान माता की गोद में पाला पोसा जाता है, उसके भाग्यों की प्रशंसा कैसे की जाय?

५. सबका पहला और सच्चा गुरु तो माता है, जो सौ शिक्षक सिखा नहीं पाते, वह गुणवान माता केवल आंख के इशारे से सिखा सकती है।

६. हे माता! बुरी प्रथाओं का अनुगमन न कर। लोक परलोक का सुख चाहो तो दहेज की बुरी प्रथा से दूर रह।

७. जिसने अपनी माता की सच्चे दिल से सेवा की और उसका आशीर्वाद प्राप्त किया, उसने इस जगत से अच्छी फसल काटी।

८. जो घर नौकरों के हाथों में है, उसमें न स्वास्थ्य है और न सुख। खाने की चीज सदैव अपने हाथों से अत्यन्त स्वच्छता के साथ तैयार करनी चाहिये।

९. घर वह कहा जाय, जहां हर वस्तु सही जगह पर रखी हो। हर वस्तु के रखने की जगह नियत हो और जरूरत के समय हर वस्तु अपनी नियत जगह से तत्काल मिल सके।

१०. जिस घर में स्त्री का मुख प्रफुल्लित्त नहीं है, उस घर में रहने से विदेश का दुख भोगना अच्छा है।

११. हे माता! सादगी में सुख है, स्वच्छता में स्वास्थ्य है, सेवा में जीवन का उद्धार है। अतः अपनी सन्तान को सादगी, सफाई और सेवा का गुण सिखाओ।

१२. अपनी सन्तान को विरासत में वह सब कुछ दिया जाय, जो प्राप्त करके सन्तान अपनी माता पिता का उम्र भर यश गाती रहे और नाम रोशन करती रहे। दौलत विरासत में देने से ऐसी आशा रखी नहीं जा सकती, क्योंकि दौलत अभिमानी बनाती है तथा जिन्दगी को विषय-रस में नष्ट कर देती है।

१३. हे माता! यदि चाहो कि बड़े होने पर तुम्हारे बालक तुम्हारा यश गाएं तो उन्हें विरासत में शुभ गुण; सत् शास्त्र और ब्रह्म विद्या दो।

१४. जो माता अपने बालक को सत् शास्त्र लेकर देती है, वह उसे लोक परलोक के सभी सुख प्रदान करती है।

८. घर का काम काज

१. ऐ माता, तुझे चाहिये कि घर को मन्दिर बनाओ और घर का काम काज इस प्रकार करो, जो वही प्रभु की पूजा बन जाय।

२. जो अपने घर का काम काज अच्छी तरह करता है, उसे किसी अन्य पूजा करने की आवश्यकता नहीं है। हे माता! घर के आदमियों को ठाकुर समझो और घर के काम काज को ठाकुरों की पूजा करके समझो।

३. जिस भाव से घर में काम काज किया जाता है, वैसा ही उससे सुख दुख अथवा बन्धन और मोक्ष का फल मिलता है। झुंझलाकर काम करना है नर्क का दुख भोगना और प्रसन्न होकर काम करना है स्वर्ग का आनन्द भोगना।

४. पत्नि और पति का आपस में सच्चा प्यार तभी स्थापित होता है, जब दोनों का प्यार हृदय में बैठे हुए परमात्मा की ओर झुकता है।

५. पतिव्रता स्त्री अपने पति की सेवा से जो फल प्राप्त करती है, वह ऋषि मुनि घोर तपस्या एवं कष्ट के पश्चात् कठिनाई से प्राप्त करते हैं।

६. शरीर मिला है सेवा के लिए। हे माता! घर का काम अपने हाथों से करो, उससे स्वास्थ्य बढ़ता है, औरों को प्रसन्नता मिलती है।

७. जीव जब तक कर्म कर रहा है, जब तक जीवित है। जब कर्म करना छोड़ देता है, तब मुर्दा है।

८. अगर तुझे जीवत प्यारी है तो प्रसन्नता से काम करता रह।

९. जैसे चाबी उपयोग में न लाने से उस पर जंग लग जाता है, वैसे शरीर बिना श्रम के बीमार हो जाता है। अव्यवों को चलाओ। अपना काम न हो तो दूसरों की सेवा करो। बुद्धिमानों का कहना याद रखो कि "बेकार से बेगार भली है।"

१०. शरीर श्रम करने से प्रफुल्लित रहता है। निकम्मा आदमी न केवल दूसरों पर भार है, किन्तु अपने पर स्वयं भी भार है, क्योंकि उसे अपना शरीर उठाना भी भारी बोझा लगता है।

११. हे माता! घर की सफाई, स्वच्छता और काम काज, खाना तैयार करने, सीने पिरोने को भगवत्-सेवा समझकर किया करो तो देगची में करछी

घुमाने से जो आवाज होती है, उसमें भी "ओ३म्" का आलाप सुनने में आएगा और जिस समय चावल उबलेंगे, उस समय भी "सोऽहम्" का मधुर गीत सुनोगी।

१२. यदि घर का काम काज करते हुए ज्ञान की उच्च मन्जिल प्राप्त करना चाहो तो अपने घर में मन्दिर की भावना पैदा करो और उसे अपने प्रेम एवं सेवा द्वारा सचमुच मन्दिर बना दो।

१३. जिसे घर का सुख नहीं, उसे दुनिया दुख रूप लगती है। जिस का घर प्रेम और आनन्द का मन्दिर है। दुख उसके निकट भी नहीं आ सकता।

१४. भगवान ने मनुष्य को भूख और प्यास इस लिये दी, ताकि मनुष्य श्रम करके तन, मन को सुखी रखे। इससे स्पष्ट है कि श्रम करना है भगवान की सच्ची भक्ति करना।

१५. वह गृहस्थी, जो दिल की सफाई और प्रफुल्लता से श्रम करता रहता है, वह सच्चे संन्यासी से ऊपर नहीं तो नीचे भी नहीं।

९. उत्तम गुण

१. काग़ज़ के फूल और बाग़ के फूल में भेद केवल यह है कि काग़ज़ के फूल में सुगन्ध नहीं है। मनुष्य, जिसमें नम्रता एवं शिष्ठता नहीं है, वह काग़ज़ के फूल की तरह है।

२. जीवन के पेड़ का फल न है दौलत, न शिक्षा न बुद्धि और न सन्तान। नेकी वह फल है, जो जीवन के पेड़ को अमर करता है।

३. जो स्वयं अच्छा है, वह सारे जग को अच्छा समझता है। क्या हरे चश्मे से सब कुछ हरा नहीं दीखता? श्री गुरु अर्जुनदेव जी का वचन याद रखो:—
मन अपने ते बुरा मिटाना, पेखे सगल सृष्ट साजना।

४. गुणवान व्यक्ति कभी अभिमानी नहीं होता। फल वाली डाली सदैव झुकी रहती है।

५. नम्र होकर चलना, मधुर बोलना और बांट कर खाना, ये तीन गुण आदमी को ईश्वरीय पद पर पहुंचाते हैं।

६. बड़े में बड़ी विद्या कौनसी है? अपनी मूर्खता का परिचय। बड़े से बड़ी अविद्या कौनसी है? स्वयं को बुद्धिमान समझना।

७. मनुष्य का सौन्दर्य, न रूप पर निर्भर करता है, न आभूषणों पर किन्तु उत्तम गुणों पर।

८. अंगूठी बाएं हाथ में पहनी जाती है, यद्यपि अधिक उपयोगी दाहिना हाथ है। भले आदमी को बाहरी शृङ्गार की आवश्यकता नहीं है, उसकी बुद्धि और नेकी ही सच्चा शृङ्गार है।

९. दिन वह अच्छा, जिस दिन अच्छे कर्म किये जायं। खाना वह अच्छा, जो बांटकर खाया जाय। पैसा वह अच्छा, जो गरीबों के काम में लगाया जाय। विद्या वह अच्छी, जिससे नम्रता प्राप्त की जाय।

१०. बुद्धिमान वह है, जो हर आकार को देखकर, आकार के बनाने वाले को याद करता है। चित्र से चित्रकार की महिमा अधिक है। अपनी वृति को इस संसार से उठाकर, संसार के रचियता में तन्मय करनी चाहिये। उसकी महिमा में लीन होकर उसका गुणगान करते रहना चाहिये।

११. हे भाई! दूसरों को उसकी भूल अनुभव कराने के लिए उसके साथ बहस करनी उचित नहीं। हमारा काम नहीं कि दूसरों की अवस्थाओं का न्याय करें, परन्तु दूसरों के दिलों को शांति देना हमारा दिन-रात का व्यवसाय होना चाहिये।

१२. पराई स्त्री, पराया धन और अपनी बुद्धि। ये तीनों चीज़ें मनुष्य को स्वभाविक तौर से अधिक दृष्टिगोचर होती हैं।

१३. सच्ची बुद्धिमता इसमें है कि मनुष्य अपनी स्त्री, अपने धन को सब कुछ समझकर सन्तोष रखे और अपनी बुद्धि पर अभिमान न करे, अपितु दूसरों को बुद्धिमान समझकर, उनसे आश्चर्य का पाठ पढ़ता रहे।

१४. यदि चाहो तो मुझमें उत्तम गुणों का वास हो तो श्रेष्ठ पुरुषों के जीवन चरित्र का हृदय से मनन करो।

१०. आचरण

१. अपने भविष्य के भाग्य जानने के लिए जन्म-पत्री दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं। दिल की जन्म-पत्री देख लें। यदि भाव नेक और विचार ऊंचे हों तो अवश्यमेव भाग्य ऊंचे होते जाएंगे।

२. वह फूल किस काम का, जिसमें सुगन्ध नहीं। वह कथनी कैसी? जिसमें आचरण नहीं। आचरण रहित इल्म ऐसा है, जैसे अन्धे के लिए चश्मा। करनी

रहित कथनी किस काम की? केवल चीनी का नाम लेने से कभी किसी का मुंह मीठा हुआ?

३. चाहे कोई चार वेद, छह शास्त्र और अठारह पुराण पढ़ ले, परन्तु यदि आचरण नहीं करता तो वह इस प्रकार है, जिस प्रकार प्रकाश के बिना बत्ती अथवा प्राण बिना शरीर।

४. यदि सच्चाई हो तो वाणी और दिल अर्थात् कथनी और करनी दोनों एक हो जायं। सच्चाई वह मार्ग है, जिस पर कोई भी आपदा आ नहीं सकती। कभी नहीं सुना कि शाही सड़क पर चलते हुए किसी को शेर अथवा भेड़िये ने आ घेरा।

५. जो पढ़ा, परन्तु उसके अनुसार चला नहीं, वह उस समान है, जिसने खेत बोया किन्तु काटा नहीं।

६. अपराध किया जाय और उसके लिये कोई डांटे तो उचित है। परन्तु मजा तब है, जब अपराध किया ही न गया हो तो भी दण्ड ख़ुशी के साथ भोगा जाय।

७. जीवन को चार रत्नों से सजाओ तो तुम्हारी शोभा स्वर्ग की अपसराओं से भी अधिक हो जाय:-
(१) प्रेम (२) नम्रता (३) सेवा (४) धैर्य।

८. जीवन में सादा खाओ और सादा पहनो। लेकिन अपने विचार ऊंचे और महान बनाओ।

९. जिसे बलिदान करने की मिठास आ गयी, उससे अन्य सारा मजा भूल गया।

१०. हाथ काम करने में चुस्त रखो, लेकिन मस्तिष्क को परमात्म-ध्यान में शीतल रखो।

११. हे भाई! फूल की भांति बनो तो प्रत्येक तुझे अपनी आखों पर रखे। पत्थर की भांति न बनो, जो प्रत्येक तुम से ठोकर खाकर गिरे।

१२. सत्पुरुषों की वाणी इसलिए है कि उसके अनुसार आचरण करके सुख प्राप्त किया जाय और इस लिये नहीं कि केवल पाठ करके समय पूरा किया जाय।

१३. दो प्रकार के व्यक्ति जीवन से कुछ प्राप्त करके नहीं गए। एक तो वे, जिनके पास दौलत थी, परन्तु दान नहीं किया। दूसरे वे जिन्हें इल्म (विद्या) था, परन्तु (अमल) आचरण नहीं किया।

१४. इत्तर अपनी सुगंध स्वयं ही देता है। गुणवान मनुष्य को किसी भी विज्ञापन की आवश्यकता नहीं।

१५. मजलस में बैठो, न इस विचार से कि मजलस का मज़ा लूं, परन्तु इस भाव से कि स्वयं कष्ट

सहन करके भी दूसरों को मजलस का मजा लेने दूं। जो इस प्रकार ही मजलस में सम्मिलित होता है, उसे सर्वत्र और सदैव मजलस का मजा प्राप्त रहता है।

१६. सौन्दर्य किसमें हैं? किया जाए परन्तु कुछ कहा न जाय। असौन्दर्य किसमें है? किया कुछ न जाय, केवल कहा जाय।

१७. जब तक आवश्यकता न पड़े, तब तक कुछ बोलो नहीं और जब तक भूख न लगे, तब तक कुछ खाओ नहीं।

१८. इस संसार में ऐसा मीठा न बनो, जो लोग तुम्हें शक्कर की भांति खा जाएं परन्तु ऐसे उग्र स्वभाव का भी न बनो, जो सिरके की भांति तुझे थू थू करके त्याग दें। गम्भीर होकर रहो, न ग़मगीन। प्रसन्नचित होकर रहो, न दीवाना।

१९. हे भाई! सुनी हुई बात पर विश्वास न करो। न उसके प्रत्युत्तर में किसी को कुछ कहो। जब तुम किसी की कोई बुरी बात सुनो तो उसे आधा करो, तत्पश्चात् उसका चौथा भाग करो और शेष जो कुछ रहे, उसके लिए फिर कुछ कहना ही क्या अर्थात् उसे बिल्कुल भुला दो।

—•—

११. प्यार और मिलाप

१. जब उंगलियां इकट्ठी होती हैं, तब ग्रास मुख में डाला जा सकता है। क्या यह पर्याप्त प्रमाण नहीं कि मिलाप से कार्य करने से ही जीविका मिलती है?

२. डाली, जो पेड़ से टूटकर अलग हुई, वह शीघ्र ही सूख सड़ जाती है। सच है कि जो समाज से अलग हुआ, वह फिर कभी हरा भरा नहीं हुआ।

३. सभी के हृदयों में अपने रहने का स्थान बनाओ। मनुष्य रूपी फूलों में सुगंध के समान व्याप्त होकर रहो। किसी पर भार न हो, लेकिन सबका शृङ्गार बनो।

४. जो दाने ढेर से अलग हो गए, वे पिसकर आटा हो गए। सच्चे साथियों से अलग होने में यह विपत्ति है।

५. शरीरों के मिलाप को मिलाप नहीं कहा जाता, परन्तु दिलों के मिलाप को ही मिलाप कहा जाता है।

६. दुनिया में अपने रहने के लिए तुमने यदि कोई सुन्दर महल बनवाया तो क्या हुआ? तुझे मनुष्य तब कहा जाय, जब लोगों के दिलों में अपने रहने के लिए प्रेम का भवन बनाओ।

७. प्यार वह जादू है, जो शत्रु को भी मित्र कर देता है। कांटे को फूल बनाना उसके लिए एक तुच्छ खेल है।

८. इस्पात की तलवार एक को काट करके दो टुकड़े कर देती है, किन्तु प्रेम की कटार दो को मिला कर एक कर देती है।

९. बार-बार मिलने से प्रेम और सम्मान कम होते हैं। भीलनी, जो चन्दन बन में रहती है, वह चन्दन की कद्र यह करती है कि प्रतिदिन रसोई घर में चन्दन की लकड़ियां जलाती है।

१०. आम का पेड़ किसी शून्य स्थान पर शोभा नहीं देता। बाग में अपनी और अन्य पेड़ों की तथा बाग की शोभा बढ़ाता है। मिलाप की वही महिमा है। कहावत है "कुत्ता भी कुटम्ब के बिना शोभा नहीं पाता।"

११. दिल को प्यार से भर दो। यह वह दिव्य ज्योति है, जो क्षण भर में दुख को मिटाकर सुख कर देती है।

१२. पूछा कि भगवान को प्रसन्न करने का मंत्र कौनसा है? कहा कि "मधुर बोलना"। क्योंकि मधुर बोलने से लोग प्रसन्न होते हैं और लोगों की प्रसन्नता ईश्वर की प्रसन्नता है।

१३. हे बुद्धिमान! अपने वचन का दीपक मधुरता की मोम से चिकना करो कि तुम्हारे प्रत्येक वचन से दीपक की तरह प्रकाश निकलता रहे।

१२. धैर्य

१. हे प्रभु! तुमने बहुत से सुख दिये हैं। दया करके थोड़ा धैर्य भी प्रदान करो।

२. मैं भवसागर के उतार चढ़ाव रूपी लहरों का डर क्यों करूं? धैर्य के जहाज पर सवार हूं, फिर दिल की धड़कन क्यों?

३. दौलत नष्ट हो सकती है, इज्जत नाश हो सकती है, मित्र बेवफा हो सकता है; परन्तु धैर्य न नष्ट हो सकता है, न लुट सकता है।

४. पूछा कि विपत्ति का पहाड़ किस तरह हल्का हो सकता है? उत्तर मिला कि "जी, धैर्य के द्वारा"।

५. किसी भी अवस्था को देखकर डर न जाओ। याद रखो कि परमात्मा हर समय और हर जगह तुम्हारे साथ है।

६. धैर्यवान व्यक्ति उस वीर से श्रेष्ठ है, जिसे केवल जबान का बल है। अपने मन पर राज्य करने वाला व्यक्ति उस राजा से श्रेष्ट है, जो केवल देश विजय करके जानता है।

७. हे भाई! अपने विचार के प्रवाह में न बह जाओ। धैर्य से भीतर बैठे हुए गुरू की आवाज सुनो और उसकी शिक्षा पर आचरण करो।

८. सत्पुरुष न निन्दा को जानते हैं, न चिल्लाहट को; उनका दिल है धैर्य का कारखाना।

९. दुनिया में ईश्वर ने सैकड़ों सहस्रों नियामतें रची हैं, लेकिन धैर्य के समान अन्य कोई भी नियामत नहीं है। उनका स्वाद लेकर तो देखो।

१०. धैर्य हो तो दीपक जैसा, जो जलते हुए, सिर से पैरों तक जल गया; परन्तु स्वयं छुड़ाकर भागने का यत्न नहीं किया।

११. मेरा दिल तृप्त क्यों नहीं रहता? क्योंकि क्रोध का खाना सदैव खाता रहता हूं और पर्देपोशी का पानी पीता रहता हूं।

१२. जिस दिल को क्रोध की अग्नि जला नहीं सकती, उसका दर्शन गंगा के तीर्थ करने से भी अधिक लाभप्रद है।

१३. ऐ मनुष्य! तुम मिट्टी की उत्पति हो। मिट्टी का स्वभाव है धैर्य। तुम्हें भी हर हाल में धैर्य रखना चाहिये।

१४. जब दूसरों के कड़वे वचन धैर्य के कानों से मैंने सुने, तब क्या देखा कि एक एक वचन जो वे कहते हैं, वह सुन्दर शिक्षाओं का शास्त्र है।

१५. शरीर बलवान न हो तो परवाह नहीं, किन्तु दिल अवश्य बड़ा होना चाहिये।

१६. यदि मूर्ख आदमी बुद्धिमान व्यक्ति से दुरव्यवहार करे तो इसलिए मूर्ख आदमी बड़ा नहीं हो गया। भला पत्थर लगने से सोने का प्याला टेढ़ा हो जाय तो इसलिये पत्थर का मूल्य सोने से अधिक नहीं हो जाएगा।

१७. मैंने पूछा कि बिगड़ी बात को बनाने का कोई उपाय है? उत्तर मिला "जी, धैर्य"।

१८. दीपक उल्टा किया जाय अथवा सीधा किया जाय तो क्या? दोनों दशाओं में उसकी लौ ऊपर ही रहती है। धैर्यवान व्यक्ति का चेहरा भी हर अवस्था में मुस्कराता रहता है।

१९. धैर्य है इकट्ठा किया हुआ समय! यदि समय का मूल्य पहचानने वाले हो तो जल्दबाजी न करो, क्योंकि जल्दबाजी में समय बिल्कुल व्यर्थ जाता है। धैर्य के एक दम में उस कार्य को पूरा करने की शक्ति है, जो वर्षों की जल्दबाजी करने से उल्टा बिगड़ता गया हो।

२०. हे भ्राता! निराश न हो। यह सृष्टि सर्व-शक्तिवान भगवान का महल है और तुम इस महल में उसके अतिथि हो। जिस अतिथि की देखभाल करने वाला हर प्रकार से समर्थ है, वह अतिथि दीन और दुखी क्यों हो?

२१. सर्व दुखों की निवृत्ति और सर्व सुखों की प्राप्ति मोक्ष है। सच्चा मोक्ष सर्व सुख को सर्व दुख करके जानो ॥ 'दुख दारू, सुख रोग भया' (गुरु ग्रन्थ साहब) कोई भी अवस्था सदैव नहीं चलती। जब सब कुछ बीत जाना है तो चिन्ता किस बात की?

२२. यदि सहनशीलता का मधुर स्वाद लो और बलिदान का अमूल्य मूल्य पहचान सको तो प्रत्येक कष्ट तुम्हारे लिए तरावट बन जाय।

२३. यहां कोई भी बात नयी नहीं है। बेवफाई, बीमारी, दुख और मौत सभी साधारण बातें हैं, जो प्रतिदिन होती रहती हैं, फिर साधारण सी बात का विचार क्यों किया जाय?

२४. समय बीतने से अन्त में मनुष्य प्रत्येक बात और अवस्था के अनुकूल हो जाता है। ऐसा समझकर आरम्भ से ही धैर्य करना चाहिये।

२५. पृथ्वी को कैसे भी खोदा जाय, पेड़ों को कितना भी काटो और छीलो तो भी कुछ नहीं बोलते, सन्तों की भी ऐसी ही चाल है। सांसारिक लोगों के बोल-कुबोल का विचार न करके वे सदैव धैर्य में रहते हैं।

२६. जैसे सोना अग्नि में पड़ने से अधिक चमकता है, वैसे धैर्यवान मनुष्य आपदा में अधिक दमकता है।

१३. कृतज्ञता

१. जिसने तुम्हारे ऊपर अहसान किये हैं, उसका आभार न भूलो। क्योंकि आभार मानना सौभाग्य का चिन्ह है और कृतघ्न होना बिल्कुल दुर्भाग्य का चिन्ह है।

२. शरीर का एक एक रोम जवान हो जाय तो भी परमात्मा की भलाई का आभार वर्णन नहीं किया जा सकता।

३. हे प्रभु! दांत निकलने से पहले ही तुमने हमारे लिए भोजन उपस्थित किया। किस मुख से तुम्हारी प्रशंसा करूं?

४. जो तुमसे थोड़ी भी भलाई करे तो उसका दिल व जान से आभार मानो। सदैव यह आचरण करने से तुम्हारा दिल अमृत का झरना बन जाएगा।

५. देने वाला तो सचमुच परमात्मा है, परन्तु नाम होता है कि अमुक-अमुक ने दिया। यदि यह बात समझ में आ जाय तो रात-दिन वाह-वाह के अतिरिक्त अन्य शब्द ज़बान पर न आवे।

६. दीपक की तरह कृतज्ञता में होशियार, बिचारे का सिर जल जाय तो भी गर्दन से लौ वाली जबान निकालकर खड़ा है।

७. अभिमान के रोग का उपचार है आभार मानना, जब मनुष्य कृतघ्न होता है, तब आपे का कालापन उसे ऐसा कुरूप बनाता है कि कुष्ट के रोग की तरह उसे कोई पास में खड़ा होना भी सहन नहीं करता।

८. कृतघ्न व्यक्ति जीवित होते हुए भी नर्क में है और अहसान मानने वाला सदा स्वर्ग में।

९. आभार मानने का गुण सीखो तो नारियल के पेड़ से सीखो, जिसे पानी देकर, जब पालन करके बड़ा किया गया तो वापसी में नारियलों में मधुर पानी और मलाई भरकर एहसान उतारता है।

१०. आभार मानने वाले व्यक्ति का दिल अमृत का सागर है और उसकी जबान मधुरता का मधुर झरना।

११. जो प्रभु क्षण-क्षण रक्षा करता है और प्राण देता है, उसकी कृतज्ञता भी तो क्षण-क्षण करनी चाहिये।

१४. दया

१. दिल की कोमलता को कहा जाता है दया। यह गुण सभी गुणों का मूल है। यदि किसी में दया का गुण आ जाय तो उसमें सभी गुण आ जायं।

२. ईश्वर को कहते हैं अनाथों का नाथ। दुनिया में जो व्यक्ति अनाथों की देख-भाल करता है, वह ईश्वर का अवतार है।

३. जो दूसरे के दर्द को देखकर दुखी होता है, भगवान उसके सभी दर्दों को दूर करता है।

४. किसी के दिल को मत दुखाओ, क्योंकि प्रत्येक दिल परमात्मा का निवास स्थान है।

५. दिल की कोमलता को दया कहा जाता है। यदि दिल में कपट हो, फिर वाणी मीठी हुई तो क्या हुआ?

६. परमात्मा अनाथों का नाथ है और निराश्रतों का आश्रय। यदि तुम अनाथों पर दया करो और असहाओं को सहारा दो तो तुम परमात्मा का रूप हो जाओ।

७. जब दूसरे को सुख दिया जाता है, तब दिल में प्रसन्नता दौड़ती आती है। वह व्यक्ति भाग्यशाली है, जो इस बात का अनुभव करता रहता है।

८. दूसरों को इतना सताओ, जितना तुम स्वयं दूसरे का सताना सहन कर सको। न्याय अनुसार चलो।

९. सच्चा दान वह है, जो दीन, दरद्रि को दिया और जिसकी खबर अन्य किसी को न पड़े, अपितु स्वयं भी उसी समय भुला दे।

१०. जब दूसरों के लिए जीवन बलिदान किया जाता है, तो जीवन कैसा न महान हो जाता है।

११. समुद्र का अपार पानी प्यास न मिटाने के कारण प्यासे मनुष्य के लिए व्यर्थ है। धनवान का धन भी समुद्र के पानी की तरह है। जिस धन से गरीबों की आवश्यकताएं पूरी नहीं होती, वह कोयला कंकर करके समझो।

१६. द्वेष एवं जलन

१. द्वेषी के लिए प्राणों की गति आरी की गति के समान है। स्वास-स्वास उसके दिल को चीरता रहता है।

२. ईर्षालु को दिन रात क्यों न मैं बैठ कर आशीर्वाद दूं, जो बिचारा जल भुनकर मेरी पाप की बहियों को जलाता है।

३. जलन ऐसी खराब वस्तु है कि जो दिल को सदैव जलाती रहती है, वरन् जिसके लिए दिल में जलन होती है, उसे जब देखा जाय, तब तो चेहरा भी जलकर काला हो जाय।

४. जो द्वेष के कारण उसे गालियां दे, उसे तुम दिल से दुआएं दो तो तुझ में विष को अमृत बनाने की शक्ति आ जाय।

५. जब बिना अपराध कोई तुझे हाथ उठाकर कोसे तो ऐसा समझो कि तुझे दुआएं देता है। उस का कोसना तेरे लिए आशीर्वाद रूप होगा।

६. लकड़ी की अग्नि से जलन की अग्नि की तुलना कैसे करूं? वह एक बार जलकर शान्त हो जाती है, परन्तु यह समस्त आयु अथवा क्षण-क्षण जलती रहती है। हे प्रियतम! आओ तो तुझे नर्क की अग्नि से बचने का मार्ग बताऊं। दिल में जलन की अग्नि जल रही है, वही नर्क की अग्नि है। ईर्ष्या की भयानक आग को बुझाओ तो जीवित रहते ही स्वर्ग की शीतलता का आनन्द प्राप्त करो।

७. प्रत्येक चाहता है कि मैं सदैव प्रसन्न रहूं। उस कामना के होते हुए भी प्रत्येक जानबूझ करके अपने को द्वेष और बैर की अग्नि में जला रहा है, अफसोस!

८. अपराध अन्य का, परन्तु जलता है तुम्हारा दिल! पाप दूसरा मनुष्य करता है, परन्तु जलते पचते तुम हो। वाह रे दिल तुम्हारा न्याय! पराई अग्नि में अपने को जलाते हो।

९. यदि तुम पड़ौसी, साथी एवं अपने से नीचे पद वाले को बढ़ता हुआ देख कर प्रसन्न होते हो तो कहा जाएगा कि द्वेष तुम्हारे यहां से विदा हो गया।

१६. गरीबी

१. गरीबी का भेष इसलिये मैंने पहना है कि अमीरों की उदारता और दया की परीक्षा ले सकूं। मेरी गरीबी है अमीरों के लिये रोशनी।

२. मेरे समान अन्य कौन धनवान होगा? इच्छा का त्याग, यही है मेरी दौलत।

३. गरीब के सूखे टुकड़े में स्वास्थ्य का अमृत भरा हुआ है। अमीरों के भोजन में वह विष पड़ा हुआ है कि शरीर में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न करता है।

४. गरीबी की ताकत से मित्र एवं शत्रु को मैंने अपने वश में किया है। तुम्हारी जबर्दस्ती के मुकाबले मेरी निम्रता जीत जाती है।

५. क्या रेशम से सूत अधिक मजबूत नहीं? इससे ही अनुभव करो कि रेशम पहनने वाला महान है अथवा सूत पहनने वाला?

६. सोने अथवा जवाहरात की खान वीरानी और मिट्टी में होती है। वैसे ही गरीब जो अपने पास पैसा नहीं रखता वह किसी बड़ी सम्पति का स्वामी है।

७. शासन कहा जाय तो सच्चे सन्तों का। बड़े बड़े बादशाह एवं अमीर उनके द्वार के भिखारी होकर फिरते रहते हैं।

८. गरीब हूं तो क्या हुआ? राजकीय सिंहासन के कष्ट एवं अमीरों के दुखों से तो मुक्त हूं। नीला आकाश है मेरे दीवार रहित घर की छत और चन्द्रमा की चान्दनी है मेरे विशाल घर का सुनहला फर्श।

९. गरीबों को गदेलों और गलीचों की कौन सी आवश्यकता? धरती जैसा कोई दूसरा गलीचा? गरीब के पैरों के चिन्ह ही उस गलीचे के सुन्दर चित्र हैं।

१०. जो अपने को अनाथ समझता है, परमात्मा उसका नाथ बैठा है। जो अपने को विनम्र करता है, परमात्मा उसका मान रखता है।

११. एक महापुरुष का वचन है कि मकोड़ी की भांति नम्र बनो जो पैरों से कुचली जाती है, लेकिन कुछ भी कहती नहीं। ततैये की भांति कठोर न बनो, जो आकाश में उड़ता है, परन्तु सबको पीड़ा देता है।

१२. जो अपने को स्वामी समझता है, उसे नौकर होकर रहना पड़ता है और जो स्वयं को नौकर समझता है, वह स्वामी होकर रहता है।

१३. विजय उसने पाई, जिसने ख़ुशी से अपनी पराजय मानी। जो पहाड़ी के नीचे खड़ा है, उसे उतार भी चढ़ाई की भांति दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार जो नम्र होता है, उसके लिये दुख भी सुख हो जाता है।

१४. बड़ा वह नहीं, जो दस मनुष्यों को रोब से दबाता है किन्तु बड़ा वह है, जो बिना स्वार्थ के दूसरे के सामने सिर झुका सकता है। झुकना है, ऊंचा होना।

१५. गरीबी लूटी नहीं जा सकती है। शाहूकार को लुटने का डर रहता है, ऊपर बैठे हुए को नीचे गिरने का डर है, भला नीचे बैठा हुआ कहां गिरेगा?

१६. गरीब तथा शाहूकार, नींद के समय दोनों एक समान है, अपितु गरीब को धनवान से अच्छी नींद आती है, जो खुशी का खजाना है।

१७. गरीब व्यक्ति, जो स्वयं में प्रसन्न रहता है और सन्तोष से समय बिताता है, वह उस अमीर से अच्छा है, जो तृप्त न होने से सदैव भूखा और दुखी रहता है।

१७. सन्तोष

१. एक महापुरुष का वचन है कि तृष्णा की भूख को सन्तोष आकर तृप्त करे अथवा मौत। इस बीमारी का तीसरा कोई उपचार नहीं।

२. दुनिया में अधीनता जैसी कोई आपदा नहीं है। किन्तु मनुष्य को अधीन कौन करता है? यही कमबख्त इच्छा।

३. सन्तोष वह खजाना है, जो गरीब को शाह बना देता है। सन्तोष रहित बादशाह भी भूखा रहता है।

४. हे बुद्धिमान! यह पहेली नहीं समझते कि चने के दाने में प्रकृति ने आदि से दो भाग क्यों रखे हैं। इसलिए कि सृष्टि बांट करके खाना सीखे और सन्तोष का पाठ प्राप्त करे।

५. जो पारितोषिक के लोभ पर सेवा का कार्य करता है, वह अच्छा है; किन्तु जो प्रेम में मग्न होकर सेवा करता है, उसके समान कोई नहीं।

६. चाहे किसी को कुबेर का खजाना मिल जाय, तो भी तृष्णा पूर्ण न होगी। गुरू नानकदेव जी ने सत्य कहा है कि "बुखिया बुख न उतरे, जे बना पुरियां भार" अर्थात् "तृष्णा जैसी भूख नहीं और सन्तोष जैसी तृप्ति नहीं।

७. तृष्णा है अग्नि और दुनिया के पदार्थ हैं लकड़ियां। किसी को जितने अधिक पदार्थ मिलते हैं, उतनी उसकी तृष्णा-अग्नि धधकती है।

८. तृप्त का चिन्ह कौनसा है? जो थोड़े से थोड़े पर सन्तुष्ट रहे, वह तृप्त है।

९. विशाल दृष्टि से देखा जाय तो सदैव भण्डार भरे रहेंगे और यदि तंग दृष्टि से देखा जाय तो कमी ही कमी रहेगी। फिर क्यों न हमेशा विशाल दृष्टि रखी जाय।

१०. सौन्दर्य देखो तो ऐसा देखो कि एक बार देखने से सभी इन्द्रियों की तृप्ति हो जाय। स्वाद लो तो इस प्रकार लो कि सभी इन्द्रियों को हमेशा के लिए तृप्ति आ जाय। सुगन्ध इस प्रकार लो कि सुगन्ध से दिमाग हमेशा के लिए पुर हो जाय।

११. जो एक कण को बहुत समझता है, उसके पास खुशी की कमी नहीं रहेगी। भाग्य उसके बड़े समझने चाहिये, जो थोड़े पर प्रसन्न रहकर कण को भण्डार बनाना जानता है।

१२. इच्छाओं की पूर्ति से तो इच्छाएं और भी बढ़ती जाएंगी। इच्छाओं के त्याग से तृप्ति होगी। जिसे तृष्णा लगी हुई है, वह धनवान भी निर्धन है और जो तृप्त है, वह निर्धन होते हुए भी धनवान है।

१३. हे बुद्धिमान! तृप्ति तो दिल का गुण है। वस्तुओं के मिलने न मिलने से तृप्ति का क्या सम्बन्ध? यदि पदार्थों की प्राप्ति पर तृप्ति का आश्रय हो तो अमीरों को लोभ का रोग क्यों लगे?

१४. हे हृदय! तृप्ति का गहना हमेशा पहन ले। उसके सौन्दर्य से संसार में सम्मान मिलता है और परलोक में परम पद प्राप्त होता है।

१८. एकान्त

१. जब मित्रों और सम्बन्धियों में प्रेम नहीं रहता, जब धन माल से तृप्ति नहीं मिलती, जब पद और सम्मान से आनन्द नहीं आता, लापरवाह होकर जब दुनिया की प्रत्येक चीज से दिल खट्टा होता है, तब एकान्त का कोना अमृत के समान आनन्दमय लगता है।

२. जब शेष आयु मैंने एकान्त में बिताने का निश्चय किया, तब मैं एकान्त का कोना खोजने लगा। मैंने देखा कि लोक प्रलोक के विचार से रहित होना ही सच्ची एकान्त है।

३. पहाड़ों की गुफाओं में अकेला जाकर बैठा जाय तो क्या, वृक्षों के झुरमुटों में अकेला जाकर निवास किया जाय तो क्या, दुनिया के विचार उठते रहेंगे तो एकान्त न हुई, परन्तु वहां भी माया का जाल हुआ।

४. एकान्त का कोना है ईश्वर का दरबार! जो एकान्त में आकर बैठा, उसने भगवान की दरबार में प्रवेश किया।

५. शैतान कौन है? जो ढोंग करके एकान्त में बैठता है। यदि किसी को एकान्त का आनन्द आ जाय तो उसे न किसी पदार्थ की चाह रहे और न सम्मान की इच्छा।

६. अकेला रहना एकान्त नहीं, परन्तु मन को ख्यालों से रहित करना सच्ची एकान्त है।

७. दुनिया में कोई भी सम्बन्ध को नहीं त्याग सकता और कोई भी स्वतन्त्र होकर एकान्त में बैठ नहीं सकता, जहां भी कोई जावे, वहां अन्य नहीं तो भी अपने शरीर का संग ही बड़ा बन्धन लगा ही रहता है। शरीर के विचार से रहित होना ही सच्ची एकान्त है।

८. बच्चा जब तक पेट के कोने में अकेला है, तब तक रोता नहीं। वहां से निकलते ही रोना आरम्भ कर देता है। तब जो एकान्त के कोने से निकल कर महफिल में सम्मिलत होता है, उसे क्यों न रोना पड़ेगा?

९. वास्तविक एकान्त वह है, जो दुनिया में चलते फिरते, कार्य करते हुए भी समझे कि मैं दुनिया में हूं ही नहीं।

१०. मैंने पूछा :- "ऐ बरसात की बूंद! तू मोती कैसे बन गयी?" उत्तर दिया :- "सीप के सीने में एकान्त में रहने से।"

११. जब दो व्यक्ति आपस में मिलतते हैं, तब झगड़े उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। हमने कभी नहीं सुना कि कोई अकेला हो और झगड़ा हुआ।

१२. अगर अपने जीवन की किसी को कद्र होती तो एकान्त के कोने को कुबेर का कोष समझता।

१३. मेरे एकान्त के घर में जैसा दिन, वैसी रात। एकान्त में व्यस्त होने से मैं न सूर्य को जानता हूं, न चन्द्रमा को।

१४. छोड़ कर जाने से कुछ भी छोड़ा नहीं जा सकता, दूर रहने से दूर रहा जा सकता है। कोई शून्य में रहे, परन्तु यदि उसके दिल में दुनिया के विचार आते रहते हैं तो वह दुनिया में फंसा हुआ है।

१५. एकान्त का कोना हो, दिल दुनिया की इच्छाओं से मुक्त हो और हृदय में ईश्वर का प्रेम हो तो और क्या चाहिये?

१६. मनुष्य आया भी अकेला है और जाएगा भी अकेला, केवल बीच में रिश्तों के कारण अपना वास्तविक वंश जो एकान्त है, उसे भुला बैठना न चाहिये।

१७. हे बुद्धिमान! एकान्त शब्द दो पदों से बना हुआ है, पहला एक दूसरा अन्त। जहां एक का भी अन्त हो, जहां एक भी न हो; वह हुआ एकान्त। वह पद तो परम विस्मृत और आत्म मस्ती का है।

१८. यदि तुझ में "अभिमान" है, तो तुम एकान्त में स्वतन्त्र नहीं हो, यदि तुमने "अभिमान"

का अन्त किया तो भीड़ में रहते हुए भी तुम आश्चर्य-युक्त एकान्त का अनुभव करोगे ।

१९. एकान्त अर्थात् एक का अन्त । वह एक है अभिमान । जो अभिमान से मुक्त है, वह सदैव एकान्त में है ।

---

१९. पर्दे पोश

१. जो दूसरे का पर्दा नहीं हटाता, भगवान उसका पर्दा सदैव ढकता है ।

२. जो अपने दोष देख सकता है, उसे स्वप्न में भी पराए दोष दिखाई नहीं देते ।

३. यदि चाहो कि पाप तुम्हारे निकट भी न आवे तो पाप के अस्तित्व से ऐसा इन्कार करो, जो किसी में भी तुझे पाप दिखाई न दे । पाप उसके निकट नहीं आता, जो अन्य किसी को पापी नहीं समझता ।

४. पराए दोष देखने से उसके पाप उतरकर अपने ऊपर आकर पड़ते हैं । जो दूसरे को बुरा समझता है, वह वास्तव में स्वयं बुरा है ।

५. वह व्यक्ति सदैव आनन्द में रहता है, जो किसी में भी पाप का सन्देह नहीं लाता ।

६. अपना दोष बूंद जितना हो, तो भी सागर जितना करके समझो। पराया दोष सागर जितना हो तो बूंद जितना भी न समझो।

७. किसी बुद्धिमान का वचन है कि क्रोध है मेरा भोजन और पर्दे पोशी है मेरा भेष। पहनो तो तुम सब को देखो, परन्तु तुझे कोई न देखे। क्योंकि जो दूसरे की लाज रखता है, उसकी लाज अधिक रखी जाती है।

८. इससे ऊपर अन्य कौन सी पर्दे पोशी, जो तुझे संसार में पाप दिखाई ही न दे।

९. हे बुद्धिमान! अगर निष्पाप होना चाहते हो तो पाप के अस्तित्व से इन्कार करो। सच्चा आस्तिक वह है जो पाप के अस्तित्व से इन्कार करता है।

१०. महात्माओं का दर्शन पापनाशक इसलिये है कि वे किसी को पापी नहीं समझते।

११. हे भगवान के बंदे, तुम जो रात दिन दूसरों के दोष देखते रहते हो, अतः कुछ तो सोचो और विचार करो। क्या दूसरों की निन्दा करने से तुम्हारी भूख उतरती है या प्यास मिटती है? तुझे क्या प्राप्त होता है? उल्टा समय नष्ट होता है और दूसरों का मल दिल में इकट्ठा होता है। यह तुझे अभीष्ट है?

१२. पर्दे पोशी तो परमात्मा का गुण है। जो पर्दा पोश है, वह परमात्मा के समान सबके दिलों का प्यारा बन जाता है।

१३. शहद की मक्खी की तरह सब जगह से रस निकालकर शहद बनाओ। साधारण मक्खी की तरह मल पर बैठकर धिक्कार योग्य न बनो।

१४. हे भ्राता! तुमने अनुभव किया है कि जब किसी के दोषों को विचार रहे हो, उस समय अपने दिल की खुशी जान बूझकर गंवा रहे हो।

१५. अगर चाहो तो दोष किसी में देखने में न आवे तो सबको अपना करके जानो।

१६. पाप शब्द दो पदों से बना हुआ है प+आप। प अर्थात् दूर और आप अर्थात् स्वयं। स्वयं से दूर होना अर्थात् आत्मा को भुलाना पाप है।

१७. आंखें बन्द करने की विद्या एक बड़ी विद्या है। गुरु नानकदेव जी ने मर्दाने को कहा कि "आंखें बन्द करो।" दुनिया को विदित है कि इस बरकत के द्वारा उसे एक क्षण में लाकर सुमेरु पर्वत पर पहुंचाया। सच है कि यदि कोई आंखें बन्द करने की विद्या सीखे तो एक क्षण में सब जगह पहुंच सके।

२०. विचार

१. न त्याग में सुख है न एकत्रित करने में। परन्तु सुख तो है विचार में, जिसके द्वारा कोई भी अवस्था सुखप्रद बनाई जा सकती है।

२. अविचार अमृत को विष बना देता है, किन्तु विचार विष को भी अमृत कर देता है। देखो, समझ से वैद्य कैसे संखिया जैसे विष को भी अमृत बना देता है।

३. घर में चाकू रखा हुआ है फल काटने के लिए परन्तु यदि बिना विचारे उंगली पर लगा दिया जाएगा तो सुखप्रद वस्तु भी दुखप्रद बन जाएगी।

४. वही ज़बान चारपाई पर बिठाए, वही फर्श पर गिरा दे। ज़बान वही है किन्तु भेद है विचार और अविचार का।

५. हे बुद्धिमान! जो करो, वह विचार करके करो। ऐसा न हो कि बिना विचारे कुछ कर बैठो अथवा बोल बैठो और बाद में पछताओ।

६. बीच के (मध्यम) मार्ग पर चलना अर्थात् पूरी चाल को विचार कहा जाता है। जो किसी भी ओर झुका, वह अभी गिरा।

७. विचार दो पदों से बना हुआ है विच+आर विच अर्थात् बीच और आर अर्थात् चलना।

८. हे सत्संगी, सत् और असत् का विचार करें सत् अर्थात् जो सदैव है, असत् अर्थात् जो एक समय है और दूसरे समय है ही नहीं। भला क्षण भंगुर से तुम्हारा क्या बनेगा? सदैव की वस्तु प्राप्त करके ख़ुश रहो।

९. कोई भी पक्षी उस अन्न के पास न जाएगा, जहां पक्षी जाल में फंसा हुआ है। हे भ्राता! दूसरे के दुख को देखकर शिक्षा ग्रहण करो। ऐसा न हो कि तुझे संकट में देखकर दूसरे तुझसे शिक्षा सीखें।

१०. लालची आदमी ऐसा पेट भर खाते हैं कि न चल सकें और न सांस ले सकें। जवान आदमी थाली खाली करके उठते हैं। संन्यासी और त्यागी केवल उतना खाते हैं, जितना जीवन के लिए पर्याप्त है। तपस्वी आधा पेट भोजन करते हैं, किन्तु विचारवान लोग वास्तविक भूख लगने पर ही पूरी मात्रा में खाते हैं।

११. यदि तुमने सारी आयु अच्छे काम किये हैं तो भी परमात्मा के समक्ष स्वयं को बिल्कुल मिटा दो, नहीं तो तुम्हारी भलाइयां भी तुझे जन्म-मृत्यु के चक्कर में लाएंगी।

१२. बाहर कितनी ही जलाने वाली लू लग रही हो, परन्तु जो मनुष्य उस कमरे में बैठा है, जिसे बिजली के द्वारा अपनी इच्छानुसार वातानुकूलित (Air Conditioned Room) किया जा सकता है, उस पर लू कुछ भी प्रभाव नहीं कर सकती है। हे भ्राता! अपना दिल वह कमरा है, जो अपनी इच्छानुसार ठण्डा या गर्म किया जा सकता है। बाहर दुनिया में कैसी भी अवस्थाएं हों, तुम अपने दिल के कमरे को विचार की बिजली शक्ति से रुचिकर बनाकर बैठो।

१३. हे भ्राता! कर्म करो तो विचार करके तत्पश्चात् करो। बात करो तो विचार करके तत्पश्चात् बोलो। जो पहले सोच समझकर किया जाता है, उस विषय में बाद में पछताना नहीं पड़ता।

२१. नम्रता

१. बीज धरती में नीचे रहा, तब फल वाला वृक्ष होकर बड़ा हुआ। तुम भी अभिमान को मिटाओ तो सच्चे अर्थ में आबाद बनो। श्री गुरू अर्जुनदेव ने सच कहा है कि :-

आपस को जो जाने नीचा, सोई गनीये सब ते ऊचा।

२. गिरेगा वह जो छत पर बैठा है, धरती पर बैठे हुए को गिरने का क्या डर?

हे भ्राता ! अपने सिर को नीचे झुकाओ, फिर झुकाओ और भी झुकाओ। अब इससे ऊपर अन्य कोई पद नहीं।

४. मिट्टी से कितना भागोगे? अन्त में तो शरीर मिट्टी में मिल जाना है।

५. अभिमान चिन्ह है खाली दिमाग़ का। खाली देगची बहुत उफनती है। पुर दिमाग वाला मनुष्य कभी गर्व नहीं करता।

६. अभिमान की आंधी में दिल के दीपक की रोशनी तत्काल बुझ जाती है।

७. अपने को सराहने जैसा भी कोई पागलपन? ऐ अमीर, जब अन्त में मरकर मिट्टी होना है, तो अकड़ कर क्यों चलता है?

८. पानी में बुदबुदा हवा के कारण फूल जाता है। जिसके दिमाग में अभिमान की हवा घुस जाती है वह बुदबुदे की तरह क्षण भर में नष्ट हो जाता है।

९. बांस का पेड़ ऊंचा सिर करके खड़ा रहता है, अतः उसमें फल भी नहीं लगता।

१०. ऐसी नम्रता से चलो कि धरती को तुम्हारे पैर ठोकर न मारें। यही तो अन्त में तुम्हारा बिस्तर बनेगी।

११. मूर्ख कौन है? वह जो अपने को बुद्धिमान समझता है।

१२. विनम्र व्यक्ति को मित्र तथा शत्रु सम्मान देते हैं। यह आभूषण देवताओं को भी मोहित कर लेता है।

१३. दुनिया के तालाब में तृण पत्ते की तरह रहो तो तुम्हें डूबने का डर न रहे। जो पत्थर की तरह भारी हुआ, वह तत्काल डूब गया।

१४. मोती और माणिक समुद्र के तल में रहते हैं, सीपें और घोंघे आदि ऊपरी सतह पर। फिर प्रतिभा वाला व्यक्ति क्यों न नम्रता अपनाए।

१५. गुलदस्ते में बंधते समय फूलों ने पत्तों को भी अपने साथ लिया। वाह नम्रता वाह!

१६. एक महापुरुष का वचन है कि फल वाली डाली तने की ओर झुकती है। निस्संदेह स्वयं को झुकाना गुणवान व्यक्ति का कार्य है।

१७. यदि चाहो कि तुम्हारी विद्या का नेत्र हमेशा रोशन रहे तो दुनिया में अन्तिम क्षण तक विद्यार्थी होकर रहो। जिसने अपने को शिक्षक समझा वह विद्या के आनन्द से वंचित हुआ।

१८. काल एक बड़ा शिक्षक है, जो अन्त में अभिमानी को विनम्र व्यक्ति के आगे सिर झुकाने के लिए अपना कठोर आदेश देता है।

१९. फूल जब कर्णफुल में अग्नि पर चढ़ता है, तब हमेशा के लिए दूसरों को सुगंध से सुगंधित बनाता है। मोमबत्ती जब स्वयं को गलाती है, तब दूसरों को प्रकाश देती है, वैसे जब जीव को गर्व गंवाने का ढंग आएगा, तभी ही कोई चमत्कार दिखा सकेगा।

२०. जिसने अपने को कुछ नहीं समझा है, उसके गुणों का भण्डार हमेशा भरा रहता है।

२१. हे जीव! संखिया भी जब मर जाता है, तब अमृत हो जाता है। यदि अभिमान को मारा जाय तो अमर पद को प्राप्त करने का कुश्ता बन जाय।

२२. यदि चाहो कि परमात्मा तुम्हारे कर्मों का हिसाब न ले तो एक युक्ति करो। भगवान के सामने खाली हाथ खड़े हो जाओ अर्थात् खुद को कुछ न समझो। कुछ होगा ही नहीं तो हिसाब फिर किसका हो सकेगा?

२३. परम पद प्राप्त करने के लिए गृहस्थी तथा संन्यासी को केवल एक चीज के त्याग करने की आवश्यकता है और वह है अभिमान।

२४. हे भाई! जब कोई अच्छा कार्य करना चाहो, तब उसे प्रकट करने की चिन्ता न करो। जो खुशी उसी काम को प्रकट करने में प्राप्त करना चाहते हो, उससे असंख्य बार अधिक खुशी इसमें है कि अपने को कुछ भी न समझो।

२५. जब कोई भूल करो, तब उसके लिए बहाने न बनाओ। खुशी के साथ अपनी भूल को स्वीकार करो। भूलें यदि स्वीकार की जायं तो वे मनुष्य को गिराती नहीं, किन्तु उसके गौरव को प्रकट करती हैं।

२६. अपना अभिमान त्याग करके देखो तो शेष जो बचता है, वही तो परमात्मा है।

२२. प्रसन्नता

१. हर समय मुख खिला रहने को कहा जाता है प्रसन्नता। सुख के समय तो प्रत्येक प्रसन्न दिखाई देता है किन्तु कोई दुख के समय भी प्रसन्नचित रहे।

२. लाख बातों की एक बात है कि "अपने को दुखी न करो। भूख एवं प्यास में भगवान के भरोसे में प्रसन्न रहो।"

३. दुनिया के उतार चढ़ाव में जवाहर की तरह रहो, जो जैसा मिट्टी में, वैसा मुकुट में।

४. इस क्षण-भंगुर जीवन में थोड़ी-थोड़ी बात पर दिल को दुखी करना उचित नहीं। जीवन को दीपक की सरह आनन्द से बिताओ।

५. लोग शोक के लिए इकट्ठे हुए हों अथवा उत्सव के लिए। दीपक दोनों अवस्थाओं में वही प्रकाश देता है। तुम भी खुशी अथवा ग़म में दिल को प्रसन्न रखो।

६. सच्चा रसायनिक अथवा कीमियागर वही है, जो दुख का क्षण भी खुशी में बिताता है।

७. जीवन नाम है दिल की खुशी का। यदि दिल चिन्ताओं में घुलता रहेगा तो जीवन का क्या मज़ा?

८. गंभीरता अच्छी है, लेकिन हंसमुख होना भी अपने समान आप है।

९. चेहरे को हंसमुख रखो। हंसमुख चेहरे से वे पदार्थ खरीद किये जा सकते हैं, जो असंख्य धन से भी नहीं मिलते।

१०. हे भ्राता! फूल की तरह अपने को प्रफुल्लित और हंसमुख रखो। संसार है ईश्वर का उद्यान और तुम हो ईश्वर के फूल।

११. जमाने में परिवर्तन हो अथवा शरीर में कमी पेशी हो तो भी मन को स्थिर रखो। इस जादू से सभी दुख क्षण भर में दूर होते हैं।

१२. एकता में आनन्द का उपभोग वह करता है जो इस और उस अवस्था में जरा भी भेद नहीं समझता।

१३. "यह भी बीत जाएगा।" यह मन्त्र ऐसा विचित्र मन्त्र है कि जिसके स्मरण अथवा ध्यान करने से मनुष्य दुख सुख के समय स्वयं को संभाल करके सावधान हो सकता है। न दुख में मुर्झाता है, न सुख में फूलता है।

१४. शरीर में स्वास्थ्य हो और मन में आनन्द हो तो स्वर्ग की क्या आवश्यकता!

---

२३. स्वतन्त्रता

१. मन और इन्द्रियां पूर्ण रूप से अपने वश में हों, इससे बढ़कर अन्य कौनसी स्वतन्त्रता? हे भाई! मन के बन्धन तोड़ो अर्थात् मन को अपने वश में रखो।

२. दुनिया के बाग में हवा की तरह स्वतन्त्र होकर चलो। फूल से सुगन्ध लो, परन्तु बाग को अपने लिए कारागृह न बनाओ।

३. मैंने जब तक पगड़ी सिर पर न रखी थी, तब तक किसी को अधीनता नहीं करनी पड़ी। आश्चर्य तो देखो कि सम्मान वाली पगड़ी ने मुझे पराधीन बनाया है।

४. दुनिया के अजायब घर (म्यूजिम) की खूब सैर करो, परन्तु कहीं भी अटक न जाओ। यहां की प्रत्येक वस्तु से गुण ग्रहण करके दिल बहलाओ, परन्तु किसी भी चीज़ को अपने बन्धन की ज़ंजीर मत बनाओ। मोह बड़ी फांसी है।

५. नींद अच्छी आ जाय तो जैसा फर्श पर सोना वैसा पलंग पर। यदि नींद अच्छी न आवे तो पलंग और गद्दे भी कांटों की तरह चुभते रहेंगे।

६. दिल लगाना है, दर्द मोल लेना। तब न तो दिल को लगाओ, न दर्द प्राप्त करो। वायु की तरह स्वतन्त्र रहो।

७. मैंने जगत की रंगीनी से दिल न लगाया तो 'बेरंगी' का दर्शन प्राप्त किया। जब कुछ भी अपना न समझा, तब सब कुछ अपना बन गया।

८. फूल की सुगन्ध की तरह संसार में रहो। ऐसा न हो कि तुम किसी पर भार हो जाओ।

९. जमीन है फर्श, आकाश है छत। जहां जाऊं वहां अपना घर है।

१०. स्वतन्त्र वह है, जो मन इन्द्रियों के वश में नहीं है। जीव को अन्य कोई बन्धन नहीं है, अपनी ही इन्द्रियां विषय की ओर खिंचकर उसे बन्धन में डालती है, अपना ही मन उसे आशा की ज़ंजीरों में बांधता है।

११. विचार करके देखा जाता है तो विदित होता है कि दुनिया में प्रत्येक हर समय, हर किसी से स्वतंत्र है। शरीर हर किसी को अपना अपना है आंखें, कान, नाक आदि इन्द्रियां प्रत्येक को अपने अपने हैं। कोई किसी से चिपटा हुआ नहीं। स्वतन्त्रता तो पहले ही प्राप्त है।

१२. मन पहले ही स्वतन्त्र है क्योंकि एक जगह तो लगता ही नहीं, इन्द्रियां पहले ही स्वतन्त्र हैं क्योंकि सब काम काज करते हुए भी उन में कुछ अटकता अथवा चिपकता नहीं, प्राण पहले ही स्वतन्त्र हैं क्योंकि ममता रहित हैं, दुनिया का समस्त सामान भी पहले ही स्वतन्त्र है क्योंकि उसके ऊपर किसी का अधिकार रह नहीं सकता, इस प्रकार प्रत्येक चीज आजाद है। संसार नहीं है लेकिन स्वतन्त्रता का उद्यान है।

१३. दौलत अज्ञानी के दिल का ढाढस है, मित्र पद और सम्पत्ति तक साथी है, पद उड़ते हुए पक्षी की छाया है, सन्तान बन्धन का पिंजरा है, जो ऐसा जानता है और विश्वास करता है, वह स्वतन्त्र है।

१४. हे भ्राता, वायु की तरह सबसे सम्मिलित और निर्लेप रहो। प्रत्येक रंग का मजा लेते हुए बेरंग की बहार लो।

२४. वार्त्तालाप

१. वार्त्तालाप की माला में प्रत्येक वचन मोती की तरह डालो। जो भी तुम्हारा वार्त्तालाप सुने, वाणी पर मोहित हो जाय।

२. ज़बान ३२ दांतों के भीतर सुरक्षित रखी गई है, इसलिए कि जो वाक्य बोलो, वह ३२ बार सोचकर बोलो, नहीं तो कोमल ज़बान को ऐसे कठोर गढ़ में बन्द करने का कोई कारण था ही नहीं।

३. बुद्धिमान के थोड़े बोलने से बड़े कार्य सिद्ध होते हैं और मूर्ख के बहुत बोलने से उल्टे ही झगड़े बढ़ते हैं।

४. छिले हुए कलम की ज़बान बाहर निकली हुई देखकर बुद्धिमानों ने उसे चीरना उचित समझा। जिसकी ज़बान बक-बक कर बार-बार बाहर निकलती है, वह काटना उचित है।

५. काफ़िले के घण्टे की आवाज़ सुनकर डाकू लूटने के लिए आकर ऊपर पड़ते हैं। कौन कहता है कि चिल्लाना हानिकारक नहीं है?

६. बहुत मिठास से भी रोग उत्पन्न होते हैं। कोई मधुर बोलता है, किन्तु बहुत बोलेगा तो किसी को अच्छा नहीं लगेगा।

७. बोलने की कला उस व्यक्ति ने अच्छी तरह प्राप्त की, जो कम बोलता है।

८. बहुत बोलना मूर्खता का चिन्ह है और कम बोलना बुद्धिमता का चिन्ह है।

९. कठोर और कड़वे वचन अत्यन्त अधिक बोलने पड़ते हैं परन्तु मधुर और सच्चा वचन अत्यन्त कम कहना पड़ता है।

१०. वार्त्तालाप के गुलदस्ते में प्रत्येक वचन सुगंधित फूल की तरह रखो।

११. बुद्धिमानों ने मधुर वचन की मोती से तुलना की है परन्तु किसी-किसी मनुष्य का वचन ऐसा आकर्षक लगता है कि मोती भी उस पर न्यौछावर कर दिये जायं।

१२. बुद्धिमान अपनी वाणी का स्वामी होता है, किन्तु मूर्ख अपनी वाणी का नौकर होता है।

१३. मूर्ख का दिल उसके मुंह में रहता है परन्तु बुद्धिमान का मुंह उसकी दिल में रहता है।

१४. जो बोल रहा है, आखिर तो वह बोलकर शान्त हो जाएगा। अतः अपनी बात करने के लिए उतावलापन छोड़कर, दूसरे को बोलने का पूरा अवसर दो।

१५. दूसरे को उपदेश देने जैसी सरल बात दुनिया में नहीं है और दूसरे का उपदेश कान देकर सुनने जैसी कठिन बात नहीं है।

१६. जो व्यक्ति सुनता है और सोचता है, वह बुद्धिमान होता है परन्तु जो केवल बोलता है, वह मूर्ख होता है।

१७. ईश्वर ने दो कान दिये हैं और एक ज़बान इसलिये कि जितना सुनो, उसका आधा बोलो।

१८. यदि अपने कानों को भीतर मोड़कर अपने प्रभु की आवाज़ सुनो तो आकाश के प्रत्येक तारे में मोहक मुरली के आलाप, वृक्ष के प्रत्येक पत्ते में रेडियो का मधुर स्वर और मिट्टी के प्रत्येक कण में ज्ञान का वार्त्तालाप सुनने में आए। हे बुद्धिमानों! यहां तो प्रत्येक चीज तुमसे वार्त्तालाप कर रही है। कानों को तेज़ करो और जगत की प्रत्येक चीज़ से ज्ञान की वार्त्ता सुनो।

२५. मौन

१. मैंने पूछा कि परमात्मा की भाषा कौन सी है? उत्तर मिला कि "मौन"। यदि तुम मौन की भाषा सीखो तो परमात्मा से वार्त्तालाप कर सको।

२. कली जब तक बन्द है, तब तक कोई उसे नहीं तोड़ता। जब खिलने लगती है, तब प्रत्येक उसे तोड़ मरोड़ जाता है। ज़बान भी जब तक बन्द है, तब तक कोई दुख दर्द उसके पास नहीं आता, यदि खुली तो सैकड़ों दर्द सहेगी।

३. जो बच्चा मौन में है और सम्बन्धियों से कुछ मांगता नहीं, सम्बन्धी उसका स्वयं ही विचार रखते हैं। वैसे जो मनुष्य मौन में रहता है, उसे ईश्वर सब कुछ देता है।

४. यदि मौन में मधुरता न हो तो मौन के समय क्यों दोनों होंठ एक दूसरे से चिपट जायं।

५. आवश्यकता के समय बोलने की आवश्यकता होती है किन्तु वही बोलना अच्छा लगता है, जो मौन की मधुरता से युक्त होकर निकलता है।

६. जहां कोसों के कोस समुद्र का पानी ही पानी है, मीलों के मील केवल बर्फ़ ही बर्फ़ छायी हुई है और अपार बयाबान में केवल बालू ही बालू बिखरी पड़ी है, वहां कैसी न विचित्र मौन होगी। लोगों का शोर केवल शहरों में थोड़े फ़ासले में होता है किन्तु मौन के राज्य की कोई भी सीमा नहीं।

७. पृथ्वी मौन में है, आकाश मौन में है, सूर्य, चन्द्रमा और तारे, खेत आदि सभी मौन में हैं। नदियां और सागर सभी मौन में हैं। समस्त सृष्टि मौन का मज़ा ले रही है किन्तु मनुष्य को मौन नहीं।

८. आखें जो सब देखती हैं, वे कुछ भी नहीं बोलतीं, परन्तु अफ़सोस! ज़बान जो कुछ भी नहीं देखती वह क्या-क्या न कहकर दिखाती है।

९. दो बातें सुनो, तब तक कहीं जाकर एक बात बताने का तुझे अधिकार मिले, क्यों कि परमात्मा ने कान दो दिये हैं परन्तु जिह्वा तो एक है।

१०. ऋषियों ने जो मिट्टी के ठाकुरों को पूजने का आदेश दिया है, वह इसलिये कि वे हमेशा मौन में हैं। यदि मनुष्य भी हमेशा मौन में रहे तो अच्छा ठाकुर बन जाय।

११. जब तक कोई बात हमने कही नहीं, तब तक वह हर प्रकार से हमारे वश में है, परन्तु जब कह चुके, तब अपने वश से गई।

१२. मनुष्य में सहस्त्र दोष हों तो भी मौन करके बैठने से छिप जाते हैं परन्तु कोई निर्दोष हो तो भी बहुत बोलने से उसमें कई दोष उत्पन्न हो जाते हैं।

१३. एक हरा तोता वृक्ष के हरे पत्तों के बीच में बैठा था। एक चिड़ी-मार वहां से आकर गुज़रा। परंतु हरियाली के अतिरिक्त उसे कुछ भी दिखाई न दिया। सहसा तोते ने बोलना आरम्भ किया। चिड़ीमार ने भी सजग होकर उसे पकड़ लिया। जाल में फंसे हुए तोते ने सर्द आह भरी और कहा कि "हाय, बोलने ने मुझे फंसाया।"

१४. बुद्धिमान व्यक्ति तब तक नहीं बोलता, जब तक देखता है कि न बोलने से हानि हो जाएगी।

१५. दीपक बिचारे ने तेल समाप्त हो जाने से थोड़ी भड़-भड़ की तो कतरनी लेकर जीभ (बाती का ऊपरी टुकड़ा) काट दिया, इससे स्पष्ट है कि कराहने से जो कुछ है, वह भी छिन जाता है।

१६. ऐ दिल! शीघ्र ही बात बन्द करने का अभ्यास कर ले, क्योंकि आखिर तो सदैव के लिए मौन होकर पड़ जाना है।

१७. सीप ने ज़बान को बन्द कर दिया, तब पानी की एक बूंद ने मोती बनकर दिखाया। यदि तुम भी ज़बान बन्द करो तो तुम्हारा एक एक वचन मोती से मूल्यवान हो जाय।

१८. यदि पहाड़ की तरह मौन में अपने पैर दृढ़ करके खड़े रहो तो तुम्हारी इज्ज़त की चोटी आकाश में जाकर पहुंचे।

१९. जो बहुत बोलता है, वह कान होते हुए भी बहरा रहता है, क्योंकि उसे दूसरे की बात सुनना अच्छी लगेगी ही नहीं।

२०. जब कोई तुझ पर व्यर्थ और बेबुनियाद अपराध मढ़े, तब उससे वाद-विवाद करने से श्रेष्ठ है कि मुस्कराकर मौन रखो।

२१. जब कोई तुम्हारे बोलने के बीच में बोले तब अपनी बात बन्द करो। याद रखो कि मुंह खोलने से जो मज़ा मिलता है, उससे सौ बार अधिक आनन्द मुंह बन्द रखने से मिलता है।

२२. वार्त्तालाप कैसा भी मधुर हो तो भी मौन की मधुरता के तुल्य नहीं हो सकता।

२३. मौन के ताप से पाप की सील को इस प्रकार जलाओ, जैसे सूर्य के ताप से गंदगी जलती है।

२४. झगड़े और ख़राबियां बोलने से होते हैं, मौन से कोई भी ऐसा डर नहीं। मौन से कभी ख़राबी सुनने में नहीं आई।

२५. जबान का मौन है पुखराज, मन का मौन है अमूल्य माणिक्य।

२६. बोलने पर बन्दिश नहीं। बात वह कहो, जिसे सुनकर सबका मन मौन के आनन्द में मग्न हो जाय।

२७. जब न बोलने को कहा जाता है मौन, तब मौन की मधुरता को कैसी वाणी में बैठ कर वर्णन किया जाय।

---

२६. वतन

१. गुरु नानकदेव जी का वचन है कि जल है सब का पिता और धरती है सबकी माता (श्री जपजी का श्लोक) तब जहां जहां ये दोनों हैं, वहां वहां मेरा पैतृक घर है।

२. शरीर पांच तत्वों का बना हुआ है, रहता भी पांच तत्वों में है। फिर शरीर का असली वतन तो है पांच तत्व, जो जहां तहां स्थित है, अतः प्रत्येक स्थान शरीर का वतन है।

३. हे बुद्धिमान! असली वतन तो है आत्मा अर्थात् अपना आप। अपने से अतिरिक्त यदि कुछ है तो वह है परदेश।

४. कहां भी जाऊं, वहां मैं स्वयं (आत्मा) तो उपस्थित हूं। अतः सब जगह अपना वतन है।

५. जब सब जगह परमात्मा पूर्ण है, तो फिर परदेश किसका? परमात्म दृष्टि धारण करो तो जहां तहां वतन की बहार प्राप्त करो।

६. सूर्य हर जगह वही है, आकाश हर जगह वही है। धरती, जल, अग्नि और वायु हर जगह वही है। जब वतन की ये चीज़े सब जगह उपस्थित हैं, तब जहां तहां वतन ही हुआ। परदेश तो केवल दिल का भ्रम है।

७. परमात्मा है हमारा असली वतन। परमात्म-ज्ञान के समान अन्य कोई वतन का प्रेम हो नहीं सकता। यदि किसी भूमि के टुकड़े को वतन कहो तो भी जो उस का रचियता है, पहले तो उससे प्यार रखना चाहिये।

८. परमात्मा हमारा पिता है, हम उसकी सन्तान हैं। हम जब सभी भाई हुए, तब जहां तहां वतन है।

९. हे मित्र! वतन तो वह है, जहां से कभी बिछुड़ा न जा सके।

१०. अपने उस वतन को ठीक तरह पहचान लो, जहां से मौत भी तुम्हें अलग न कर सके।

२७. परदेश

१. दूसरे के देश को कहा जाता है परदेश। जब कोई भी यहां रहने वाला नहीं है, तब यह तो परदेश हुआ और न वतन।

२. जहां अपनी भाषा जैसी भाषा नहीं सुनी जाती और अपनी रस्मों जैसी रस्में नहीं दिखाई देती, वहां परदेश का भ्रम पैदा होता है।

३. जहां कोई भी किसी के विचार से परिचित नहीं है। जब यह हाल है तो फिर वतन किसका? यह तो समस्त परदेश हुआ।

४. प्रत्येक यह कह रहा है कि 'यह मेरा वतन है' परन्तु यह विचार कोई भी नहीं करता कि जहां से आज अथवा कल में चलना है, यह तो परदेश हुआ।

५. यदि दुनिया को परदेश समझो तो वैराग्य अपनाकर चलो और यदि दुनिया को वतन समझो तो वैर-विरोध भुलाकर प्रत्येक मनुष्य के प्रेम में दीवाना रहो और सभी से प्रेम, प्यार करो।

६. जो इस वतन को परदेश और परदेश को वतन समझता है, वह ठीक समझता है। वास्तव में है भी ऐसा कि दुनिया है परदेश और परलोक है अपना वतन।

२८. बुजर्ग

१. बुजर्ग वह है, जो दुनिया की दुर्घटनाओं रूपी आंधी और बरसात में आकाश समान सदैव अप्रभावित रहता है।

२. नदी का जल शहर के बहुत से कचरे पड़ने से भी गंदा नहीं होता, अपितु हमेशा निर्मल रहकर सबकी प्यास बुझाता है। वैसे महापुरुष भी वह है, जो लोगों के डांट-डपट सहन करके भी उनसे हमेशा भलाई करता रहता है।

३. फल वाले पेड़ से भले तथा बुरे सभी फल खाते हैं, वैसे महापुरुष भी अपने गुणों का लाभ सब को पहुंचाता है।

४. बुजर्ग वह नहीं है, जो आयु में बड़ा है; परन्तु वह है, जो अनुभव और बुद्धि में बड़ा है।

५. दुखी दिल को ढाढस देना, दुर्बल में साहस फूंकना, रोने वाले को हंसाना और भूले-भटके को मार्ग दिखाना तो बुजर्ग का हमेशा का व्यवसाय है।

६. जो विष को अमृत बनाता है, जो कांटे को फूल के रूप में परिवर्तित करता है, जो अंधिकार को प्रकाश में पलट देता है, जो मुसीबत को राहत का भेष पहनाता है, वह महापुरुष है।

७. क्या चांदनी फूल तथा कांटों पर एक जैसी नहीं चमकती? इस तरह महापुरुष की दया दृष्टि खरे तथा खोटे पर एक जैसी रहती है।

८. सज्जन पुरुष से पराजय पाकर लौटना भी पुण्य है, किन्तु नीच व्यक्ति से विजय प्राप्त करके लौटना भी ख़राब!

८. पुष्प की जिस पत्ती को भी तोड़ा जाय तो उससे निर्मलता, कोमलता, सुगन्ध और शोभा प्रकट होगी; इस प्रकार महापुरुष के प्रत्येक वचन और पग-पग से सतोगुण, प्रसन्नता, शान्ति और प्रफुल्लता प्रकट होती रहती है।

१०. जिसके आगे लोग झुकते हैं वह महापुरुष नहीं; महापुरुष वह है जो स्वयं चार के आगे झुकना जानता है।

११. महापुरुष अपने पहाड़ जैसे दुख को बालू के कण जितना भी नहीं समझता है किन्तु दूसरे के तिल जितने संकट को पहाड़ जितना समझता है।

१२. ज्ञानी और अज्ञानी में अन्तर यही है कि ज्ञानी दुख को सुख बनाता है किन्तु अज्ञानी सुख को भी दुख रूप कर देता है।

१३. महापुरुष का दिल एक ही समय कपास जैसा कोमल और पहाड़ जैसा कठोर रहता है।

कैसा आश्चर्य! पराई पीड़ा को देखकर कपास जैसा कोमल होकर उससे सहानुभूति करता है और अपने दुख को देखकर पहाड़ जैसा लापरवाह और अटल रहता है।

१४. सिद्धि कही जाती है परिपक्वता को। जब तक केरी है, तब तक खटास और हरापन उसकी कचाई के चिन्ह हैं; ज्यों ज्यों पककर तैयार होगी, त्यों त्यों उस में मिठास और केसरी रंग प्रकट होते जाएंगे, पककर तैयार होने पर डाली से टूटकर अलग होती है। सिद्ध पुरुष भी अनुभव, मधुरता, गुणों की सुगंध और ज्ञान की रंगीनी से प्रफुल्लित और प्रसन्नचित्त रहकर दुनिया के पेड़ से अलग होता है और उससे ममता और दम्भ रूपी खटास और कचाई निकल जाती है।

१५. सिद्ध पुरुष वह है, जिसे दुनिया की कोई भी तमन्ना दिल में नहीं है।

१६. पेड़ को पत्थर लगा तो उससे फल टूटकर गिरा, धरती को खोदा तो उससे सोना निकला, सीप का सिर उतारा तो भी भीतर से मोती मिला, वैसे महापुरुष भी दुख के बदले सुख देते हैं।

१७. महापुरुष संसार में इस प्रकार जीता है कि उसके मरने पर लोग दुख से रोते रहते हैं किन्तु स्वयं तो मुस्कराकर चला जाता है।

१८. हे भ्राता! यदि चाहो कि महापुरुष बनू तो जिससे तुझे बर्ताव करना पड़े, उसके स्वभाव और आयु का ध्यान रखकर उससे बर्ताव करो। अपनी न चलाओ, किन्तु दूसरे की सुविधा का ध्यान रखो।

१९. बड़ा यदि नम्रता का आचरण नहीं करता तो उसकी इज्जत और सम्मान केवल क्षण-भर का अतिथि है।

---

२६. जीवन

१. दुनिया में अस्थायी चीज़ें तो बहुत सी हैं, परन्तु जीवन जैसी अविश्वसनीय कोई भी चीज़ नहीं।

२. दिन वह अच्छा, जो लोगों से भलाई करने में बीते, रात वह अच्छी, जो परमात्मा के आश्रम में बीते। श्वास-स्वास का मूल्य सोने की खान से भी अधिक है। हाय! इतनी दौलत कौड़ियों के समान समझकर लुटी जा रही है।

३. कारून को चालीस कोष किस काम आये, जो सभी यहीं छोड़ कर चला गया? हरि नाम के धन के अलावा अपने साथ कुछ भी नहीं चलता।

४. पल पल में परमात्मा का स्मरण कर। क्या पता कहीं यह पल अन्तिम हो।

५. जीवन है परलोक का खेत। जो अभी यहां बोया जाएगा, वह परलोक में काटा जाएगा।

६. दिन बदलकर रात होती है और रात बदलकर दिन होता है, आयु देखो इस प्रकार बर्बाद हो रही है।

७. जीवन के वही पल सफल हैं, जो नेकी और नाम-स्मरण में बीतते हैं।

८. वह मरा भला है, जो अपने लिये जीता है; जीना उसके लिए सफल है, जो दूसरे के सुख के लिए जीता है।

९. जीवन स्वास्थ्य और आनन्द में बीते तो जीवन का मजा है, नहीं तो जीवन विष के समान है, तब द्वेष और बैर से जीवन को कड़वा न करो, अपितु प्रेम और धैर्य से जीवन को प्रफुल्लित करो।

१०. क्षण भंगुर पदार्थों से तुझे क्या मिलेगा? अजर अमर परमात्मा को अपना बनाओ।

११. यदि विश्वास करो तो प्रेम स्वरूप परमात्मा हर समय तुम्हारे हृदय में बैठा है तो तुम्हारे प्रत्येक वचन और काम में हर समय प्रेम झलकता रहे।

१२. प्रशंसा और इज्जत, पदार्थ और दौलत, शरीर और स्वास्थ्य परछाईं की तरह घटते और बढ़ते रहते हैं, आते और जाते हैं। हे प्यारा! परछाईं को छोड़ कर प्रभु को ध्याओ, जो वास्तविक और स्थिर चीज़ है। हे भ्राता! तुम प्रभु से आये हो और प्रभु की ओर जा रहे हो। फिर दूसरे मार्ग पर क्यों चलते हो?

३०. मौत

१. हमेशा की विस्मृति को कहा जाता है 'मौत'।

२. मौत संसार के सभी दर्दों और समस्त रोगों का पूर्ण उपचार है।

३. मौत से डरता प्रत्येक है, पर मौत से बचता कोई भी नहीं है।

४. मौत से डरता वह है, जो अपने को जीवित समझता है और मौत उससे डरता है, जो अपने को मरा हुआ समझता है।

५. जो मरकर तत्पश्चात् जीता है, वह मृत्यु के समय हंसमुख होकर परमात्मा की गोद में जाता है।

६. जीने का पूर्ण स्वाद तब आता है, जब एक बार मरकर तत्पश्चात् जी कर देखा जाय।

७. ज्ञानी एक बार समय पर शरीर त्यागता है परन्तु अज्ञानी भ्रम और वहम में क्षण-क्षण में मौत का दुख भोगता है।

८. मौत सबको कड़वा लगता है परन्तु यदि कोई मरना जानता है तो मौत जैसी उत्तम चीज उसे अन्य दिखाई न दे। क्या संखिया शिंगर्फ आदि जहर मौत के बाद अमृत नहीं हो जाते।

९. मौत दुनिया के दुख सुख वाले खेल को समाप्त करने वाला पर्दा है।

१०. मौत आसक्तों के लिए विपत्ति है, बुद्धिमानों के लिए आश्चर्य है, धर्मात्मा के लिए राहत है, अज्ञानी के लिए अन्धकार और ज्ञानी के लिए अमृत है।

११. यदि मौत न हो तो संसार में न नेकी हो, न भक्ति हो। मौत के डर के कारण लोगों में ये गुण आते हैं।

१२. मनुष्य में अगर मौत का डर सच्चे प्रकार से आये तो देवताओं से भी ऊपर चढ़ जाय।

१३. जो पल-पल ईश्वर के स्मरण में बिताता है, उसे मौत का डर किसका ?

१४. मौत मनुष्य का परम रक्षक है, जो उसे निपुण और सावधान रखता है और परमार्थ की ओर लाकर उसे मोक्ष देता है।

१५. किसी का दिल जितना दुनिया में फंसा हुआ है; उतना मौत के समय उसे अधिक कष्ट देखना पड़ता है।

१६. यदि अचानक शेर के मुंह में भी चले जाओ, तब यदि मौत का समय नहीं आया है तो शेर तुम्हें कुछ भी न कर सकेगा।

१७. यदि दिन न हो तो रात क्यों हो? यदि जीवन न हो तो मौत क्यों हो? ऐसा क्यों न कहा जाय कि जैसे रात दिन को अस्तित्व देती है, वैसे मौत जीवन को अस्तित्व देता है। तब मौत तो जीवन का झरना है।

१८. जो मौत और जीवन दोनों को समान समझता है, उसका दिल हमेशा स्थिर रहता है।

१९. किसी महापुरुष का वचन है कि जीवन में ही मौत का प्याला पीकर निडर होकर रह, क्योंकि हर समय सांप के डर में रहने से सांप के पेट में प्रवेश होना श्रेष्ठ है।

२०. जब तक अपने को जीवित समझकर बैठे हो, तब तक जीवन बर्बाद कर रहे हो। स्वयं को मुर्दा समझकर जीओ तो जीवन के भय और शरारत से स्वतन्त्र हो और तुम्हारा जीवन सफल हो।

२१. हे प्रियतम! यह तो कभी अपने से पूछ कि मैं सचमुच क्या हूं? और अपने को क्या समझकर बैठा हूं?

३१. दिल की स्वच्छता

१. जिसका दिल और जबान दोनों समान हैं, वह स्वच्छ दिल है। साफ दिल परमात्मा के दर्शन का दर्पण है।

२. पाप करने को पाप कहा जाता है, परन्तु पाप छिपाने को महा पाप कहा जाता है। अतः सत्यवादी कोई भी पाप नहीं कर सकता।

३. जब अग्नि पूर्ण रूप से प्रज्वलित होती है, तब लकड़ियों से धुआं बिल्कुल बन्द हो जाता। जब दिल स्वच्छ होता है, तब पाप की कालिमा बिल्कुल नहीं रहती।

४. दिल की सफाई के कारण ऐसा निडर हो गया हूं कि शत्रु से नहीं डरता। जब मैं स्वच्छ हूं तो सभी मुझे स्वच्छ दिखाई दे रहे हैं।

५. कौए को हंस समझने से वह हंस नहीं हो जाता। यदि लोग तुझे साधु समझते हैं तो इस लिए तुम साधु नहीं बन जाते।

६. सुन्दर रूप को क्या किया जाएगा? दिल की स्वच्छता वह सौन्दर्य है, जो देवताओं को भी मोहित कर देता है।

७. मन्दिर मढ़ियों में भटकने से परमात्मा नहीं मिलता, मन के मन्दिर में झांकी पाकर देखो तो वह वहीं बैठा है।

८. घर कितना भी स्वच्छ हो तो भी प्रतिदिन झाड़ू आदि सफाई की आवश्यकता होती है। तुम बिल्कुल स्वच्छ हो तो भी दिल के घर की सफाई हमेशा करते रहो।

९. "दिल में देरा दोस्त का" यहां दिल का अर्थ है मुहब्बत अथवा प्रेम। सचमुच प्रेम परमात्मा के रहने का स्थान है।

१०. कपड़े को रंग तब लगता है, जब पहले धुलकर साफ होता है। आत्म ज्ञान का रंग भी पवित्र दिल को ही लग सकता है।

११. दुनिया में जो तूने आज तक सुना है; वह बिल्कुल भुला दो तो दिल स्वच्छ हो जाय।

१२. बच्चों का दिल स्वच्छ है। अतः प्रत्येक उनकी ओर आकर्षित होता है। जब तुम्हारी भी यह स्थिति होगी, तब कहा जाएगा कि तुम्हारा दिल यथार्थ रूप से साफ है।

१३. स्वच्छ दिल वाले का ढाढस एवं सहायक स्वयं परमात्मा है। साफ दिल वाले को लोगों के समर्थन की कोई भी आवश्यकता नहीं है।

१४. आत्म निरीक्षण करना है दिल को प्रकाशित करना और बाहर का निरीक्षण करना है दिल के दीपक को बुझाना।

१५. दिल का प्रकाश सूर्य चन्द्रमा के प्रकाश से अधिक है। जिसका दिल रोशन है, उसे दूसरे किसी भी प्रकाश की आवश्यकता नहीं है।

१६. दिल उसका रोशन है, जो अपने दोष अच्छी प्रकार समझ सकता है। पराये दोष देखने में तब तक आते हैं, जब तक दिल में प्रकाश नहीं है।

१७. दिल का प्रकाश वह दूरदर्शक यन्त्र है, जिसके द्वारा तीनों लोकों का हाल भीतर ही भीतर ज्ञात होता है।

१८. यदि दिल में प्रकाश आ जाय तो आकाश की वस्तुओं का हाल भी हाथों के नाखूनों पर लिखा हुआ दिखाई पड़े।

१९. दीपक की तरह अपने दिल में वह प्रकाश पैदा करो, जो एक कोने में बैठे ही संसार रूपी समस्त घर रोशन कर सको।

२०. शरीर मेरा है शमादान और दिल है जलती हुई शमा। दुनिया का सारा तमाशा भीतर ही भीतर देख रहा हूं।

२१. बड़े-बड़े ग्रन्थों के पढ़ने से परमात्मा नहीं मिलता, दिल का ग्रन्थ पढ़ो, क्योंकि उससे बढ़ कर अन्य कोई भी ग्रन्थ नहीं है।

२२. दिल है प्रकाश स्वरूप परमात्मा के बिराजमान होने का सिंहासन। जो ऐसा विश्वास करता है, उसका दिल सर्वदा रोशन रहता है।

२३. जो अज्ञान की दृष्टि से देखने से बन्धन होता है और दुखी करता है, वही ज्ञान की दृष्टि से देखने से स्वतन्त्रता और सुख प्रदान करता है। अपने दिल को रोशन करो तो सर्वत्र प्रकाश देखो।

२४. हे सज्जन! भीतर झांकी पाने से ही दिल ज्योतिर्मय हो जाता है। तब आठों पहर वृत्ति को अन्तर्मुख रखो तो तुम्हारे दिल का दीपक अखण्ड ज्योति की तरह हमेशा प्रकाशित रहे।

३२. विचार

१. अहा! यह विचार कैसी न विचित्र शक्ति है, समस्त सृष्टि विचार के तार पर नाच रही है।

२. एक एक विचार जो वश में किया जाता है, वह जीव की शक्ति बढ़ाता है और एक एक विचार जो स्वच्छन्द छोड़ा जाता है, वह जीव की शक्ति नष्ट करता है।

३. कहावत है कि "जीव प्रसन्न तो जगत प्रसन्न" यदि दिल खुश है तो संसार दुख रूप हो नहीं सकता।

४. महापुरुष मन के देश का स्वामी होते हैं। उन्होंने कैसी न सुन्दर राजधानी प्राप्त की है।

५. यद्यपि दिल का अनुभव शरीर के भीतर बन्द है, परंतु जिस वस्तु का नाम दिल है, वह तो धरती और आकाश की सीमाओं से असीम और ऊंच है।

६. दिल की राजधानी वह सम्पत्ति है, जिस पर सैकड़ों स्वर्गों के राज्य बलिदान करके फेंक दिये जायं। धैर्य, सन्तोष, शील, शान्ति, तृप्ति, प्रेम, अन्तर्मुखता आदि सभी दिल की राजधानी के अनुपम कोष हैं। हे भाई! इन अनन्त कोषों को छोड़कर बाहर कहां ताक रहे हो?

७. मन को जीतने से समस्त जगत को विजय कर लिया जाता है। गुरु नानकदेव जी का वचन है कि "मन जीते, जग जीत"। तुम्हारा बड़े से बड़ा शत्रु है "अज्ञान", अन्य किसी को शत्रु क्यों समझते हो ?

८. अज्ञानी और ज्ञानी में केवल भेद यह है कि अज्ञानी विचार की सीमा के भीतर रहता है और ज्ञानी विचार की सीमा के बाहर रहता है।

९. यदि विचार के कैद से अपने को बाहर निकाल सको तो दोनों लोकों में तुम्हें कैद करने वाला कोई नहीं है।

१०. विचार का भटकना है संसार में फंसना और विचार का स्थिर होना है परम पद को प्राप्त करना।

११. विचार ही बन्धन है, विचार ही मोक्ष है, विचार ही लोक है, विचार ही परलोक है; जो विचार से ऊपर है, वह है आत्मा।

१२. जब तक विचार के पीछे पड़ रहा था, तब तक मैं परेशान था। जब स्वयं को विचार का नेता बनाया, तब मेरी सब चिन्ताएं व शंकाएं दूर हो गईं।

१३. जो अपने विचार से पार चला गया, वह भवसागर से पार चला गया। विचार को स्थिर करना है विचार से पार होना।

१४. सोने की भस्म, पारे की भस्म, शिंगरफ और कलई की भस्म भी तो सभी ने सुना है परन्तु विचार वह धातु है, जिसे मारकर भस्म करके उपयोग में लाया जाय तो सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

१५. हे शूरवीर! यदि युद्ध में तुमने कितने भी मार दिये तो क्या हुआ? मन मल्ल-युद्ध करो और उसे नीचे पटक दो तो तुम्हारी शूरवीरता की धाक लोक-परलोक में जम जाय।

१६. भवसागर और कुछ नहीं है, केवल अपने मन का संकल्प विकल्प है। आश्चर्य है कि जीव अपने मन के संकल्प विकल्पों से अपने को स्वयं परेशान और दुखी कर रहा है।

१७. परिस्थितयां मनुष्य को परेशान नहीं करतीं, परन्तु परिस्थितयों का विचार उसे दुखी करता है। नहीं तो ऐसे क्यों है कि एक व्यक्ति लंगोट और सूखी रोटी में प्रसन्न रहता है और दूसरा अमीरी में भी खिन्न।

१८. मनुष्य पर हर प्रकार की परिस्थितयां आती हैं, किन्तु कोई भी परिस्थिति दुख अथवा सुख नहीं दे सकती। जिस विचार से हम उन परिस्थितयों को देखते हैं, वैसा ही रूप वे परिस्थितयां लेती हैं और हमें अपने विचार अनुसार दुख अथवा सुख देती हैं।

१९. मनुष्य को विचार तंग नहीं करता, किन्तु विचार का विचार उसे दुखी करता है। यदि विचारों के उठने का विचार ही न किया जाय तो विचार कर ही क्या सकते हैं।

२०. दुनिया का सब सामान बिल्कुल सुख स्वरूप है। यह दुनिया तब दुख रूप भासती है, जब अपना विचार सताता है।

२१. दुनिया में कुछ ऐसी परिस्थितयां होती हैं, जिन्हें बदल नहीं सकते। किन्तु अपने विचार को बदलने से परिस्थितयों के प्रभावों में बड़ा परिवर्तन आ जाता है।

२२. मन के कहने पर चलना मूर्खता है, परन्तु मन के परामर्श को ध्यान देकर सुनना आवश्यक है, इसलिए कि जो मन कहता है, उसके विपरीत आचरण करके सुख प्राप्त किया जाय।

२३. दो विचारों के बीच में जो फासला है, उसे अमर पद कहा जाता है। हे भाई! जब एक विचार उठकर पूरा हुआ है और दूसरा विचार अभी तक उठा नहीं, उस बीच में जो फासला है, उसे बढ़ाने का अभ्यास करो। यह अवस्था अमृत का झरना है। उस अमृत को पीते रहो।

२४. मन तो दुनिया तथा दीन (धर्म) के सब कार्यों को सिद्ध करने वाला है, तब मन की निंदा क्यों करते हो? जिसे मन से काम लेने की युक्ति आती है, वह मन का राजा होता है और हमेशा प्रसन्न रहता है।

२५. मन है संकल्पों विकल्पों का महासागर! महासागर को लहरों की क्या परवाह! ऐसा जानकर संकल्प-विकल्प को त्यागकर उससे अलग होकर रहो।

२६. संसार की हर एक चीज है दर्पण। उसमें केवल अपने विचार की छाया दीखती है, अन्य कुछ भी नहीं।

२७. जिसका विचार बुरा है, वह सबको बुरा समझता है किन्तु जो स्वयं अच्छा है, उसे जहां तहां नेकी का प्रकाश दृष्टिगोचर होता है।

२८. कहावत है कि "निर्बल पशु को मच्छर बहुत।" सच है कि हृदय में निर्बलता है, तब बाह्य रोग भी आकर चिपकते हैं। इसी प्रकार मन की निर्बलता से पाप होते हैं।

२९. यदि पुराण और शास्त्र दन्त कथाएं हैं तो मानव जीवन भी कोई कम दन्त कथा नहीं। अमर वह है, जो "दूसरे दम में क्या होगा" इस विचार से रहित है।

३०. मन हमेशा बच्चा है। मनुष्य कितना भी बड़ा हो जाय, परन्तु मन बड़ा होने का नहीं। अतः उसे नादान समझकर विचार से चलाना चाहिये।

३१. समर्थ कौन है? जो अपने विचार को इच्छा अनुसार चलाता है और विचार रहित कर सकता है।

३२. मन को एकाग्र करने का अभ्यास करते रहो। एकाग्रता वह अचूक नुस्खा है, जो हर एक बात में हमेशा सफलता प्रदान करता है।

३३. जीव है तालाब की तरह। तालाब में नदी का जल हमेशा नया आता रहे, नहीं तो तालाब में गंदगी हो जाती है और मच्छर तथा कीटाणु आकर अड्डा बनाते हैं। हे भाई! दिल रूपी तालाब को प्रेम रूपी नाली के द्वारा पारब्रह्म रूपी अमृत धारा से सर्वदा ताजा रखो।

३४. जब तक मन खटके रहित है, तब तक कोई भी अवस्था डरा नहीं सकती। सच कहा गया है कि "सांप न मारे, परन्तु सांप का शाप मारे।"

३५. संसार तुम्हारे विचार की आंधी है। विचार को ठीक करो तो तुझे सब कुछ ठीक दिखाई देगा। विचार के ठीक करने का अर्थ है विचार स्थिरता में लाना।

३६. छाया तब तक हमारा आगा नहीं छोड़ती, जब तक हमने प्रकाश की ओर मुख नहीं किया। विचार से भी हमारी जान तब छूटेगी, जब आत्मा की ओर देखेंगे।

३७. वृत्ति जब साक्षी के प्रति उन्मुख होती है, तब स्वयं ही विचार स्थिर हो जाता है और इन्द्रियां आनन्द से युक्त हो जाती हैं।

३८. दुख भी और सुख भी विचार से आता है। बुद्धिमान वह है, जो विचार को दुख का विष पलटने नहीं देता और उससे हमेशा सुख लेता रहता है।

३९. श्रम मनुष्य को दुखी नहीं करता, परन्तु श्रम का विचार मनुष्य के ऊपर बड़ी शिला लाकर डालता है।

४०. प्यारे! काम तो अवश्य करना है। कराहते हुए किया जाएगा तो काम बढ़ ही जाएगा। यदि प्रसन्न होकर एकाग्र चित्त से काम किया जायेगा तो आनन्द आता रहेगा।

४१. मन है एक वीणा, चाहो तो उससे मधुर स्वर आलापिये, चाहो तो उससे निरर्थक आलाप निकालो। परन्तु हे साजन! साज वह जो अच्छे स्वर आलापे।

३३. प्रेम

१. प्रेम सच्चा अमृत है, जो मनुष्य के दिल को अमर आनन्द देता है।

२. जीवन का पौधा प्रेम के पानी से हरा भरा और आबाद रहता है।

३. शराब के मटके के पास सौ वर्ष कोई बैठा रहे तो भी उसे नशा नहीं होगा, परन्तु एक चुस्की लेकर पीए तो उसे नशा हो जाय। वैसे प्रेम की बातें सुनना एक बात है परन्तु प्रेम का प्याला पीकर मग्न होना कोई बात ही दूसरी है।

४. दिल में प्रेम हो, फिर सहायक की क्या आवश्यकता? प्रेम वह जादू है, जो चटपट में लाकर मंजिल पर पहुंचाए।

५. दुख का पल भी वर्ष बराबर हो जाय, परन्तु प्रेम का वर्ष भी क्षण में बीत जाय।

६. मच्छली जैसे पानी के लिए तड़पती है, बीमार जैसे स्वास्थ्य के लिये उत्सुक रहता है, भूखा जैसे अन्न के लिए लालायित रहता है, प्यासा जैसे पानी के लिए तरसता है, वैसे परमात्मा के लिए तरसने को कहा जाता है प्रेम।

७. लोग मांगते हैं तुम्हारे दर्शन लेकिन मैं मांगता हूं तुम्हारा वियोग! क्योंकि मिलने के मजे से प्रेम का स्वाद सौ बार श्रेष्ठ है।

८. जिसको सच्चा प्रेम है, वह हमेशा छिपाव करता है किन्तु जो दिखावा करता है, उसको पता ही नहीं कि प्रेम वस्तु कैसी है?

९. प्रेम के मार्ग पर परमात्मा के लिए स्वयं हो बलिदान करो। लोगों की निंदा स्तुति से तुम्हारा क्या सम्बन्ध?

१०. निंदा प्रेम की माला का मोती है, अपयश इश्क की ज्योति का उजाला है।

११. प्रेम से अपने को इतना मग्न करो, जो जहां तहां सच्चा प्रियतम परमात्मा ही दृष्टिगोचर होता रहे।

१२. सब मस्तियों से प्रेम की मस्ती महान है। यह वह नशा है, जिसका नशा प्रलय तक भी नहीं उतरता।

१३. सूर्य की धाराओं को आतशी शीशे के द्वारा इकठ्ठा करने से अग्नि प्रकट होती है। उसी प्रकार प्रेम को एक जगह एकत्रित करने से, दिल प्रेम की आश्चर्य-शक्ति से युक्त हो जाती है। इस शक्ति द्वारा सती सावित्री ने अपने मुर्दा पति को जीवित किया था। वाह प्रेम, तुम्हारी अनुपम शक्ति!

१४. जिस आदमी ने राजा को मित्र बनाया, उसे डर किसका? इसी प्रकार जिसने परमात्मा को प्रेम के द्वारा वशीभूत किया, उसे डर अथवा चिंता किसकी?

१५. यदि प्रेम में मग्न हो जाओ तो न तुम रहो न तुम्हारा प्रियतम! सच्चा प्रेम तो वह है कि प्रियतम की स्मृति में इतना लीन होना चाहिये कि न स्वयं रहे और न प्रियतम का विचार।

३४. विविध वचन

१. परमात्मा तो स्वयं में उपस्थित है लेकिन वह खोज के अलावा कैसे मिलेगा? लस्सी में मक्खन है, किंतु बिलौने के सिवाय कैसे मिलेगा? द्वार खटखटाओ तो खुले।

२. क्या सुन्दरता में, क्या पर्दे में, क्या प्यार में, क्या कांटे में, क्या प्रकाश में, क्या अंधकार में, क्या अपने में, क्या पराये में, छिप छिपकर तुम ही अपने रंग दिखा रहे हो।

३. किसको शत्रु समझकर उससे शत्रुता करूं? जब तुम्हारे बिना कोई है ही नहीं।

४. सौ बात की एक बात ! जिसमें "मैं" नहीं वह ईश्वर रूप है।

५. आयु बीत गई पाठ पढ़ते हुए, किंतु अभी तो मंज़िल का मार्ग उतने का उतना ही है। तब जाकर मंज़िल का पता लगा, जब मैंने जाना कि मुझ में चलने की शक्ति नहीं।

६. विद्या वह अच्छी, जिसके पढ़ने से बैर द्वेष मिट जायं। जो विद्वान बैर द्वेष रखता है; वह जैसा पढ़ा, वैसा न पढ़ा।

७. कुसंगी है कोयलों की तरह, यदि गर्म होंगे तो जलाएंगे और ठंडे होंगे तो हाथ और वस्त्र काले करेंगे।

८. दीपक का आहार है अंधकार तो उस से निकलता भी है काला धुआं। सच कहा गया है कि "जैसा खाओ अन्न, वैसा होवे मन।"

९. जिसको भक्ति की बढ़ाई का पता है, उसको साधनों की कठिनाइयां भी अमृत का स्वाद देती हैं।

१०. लोग फल वाले पेड़ को इसलिये पत्थर लगाते हैं कि उससे फल टूटकर नीचे गिरे। अच्छे मनुष्य की निंदा इसलिये होती हैं कि कुछ गुण और भलाइयां उससे प्रकट हों।

११. आंखों से जो कुछ देखते हो, वह सब नाशवन्त समझो, मुख से हमेशा मधुर वचन बोलो, दिल में सदा ईश्वर का नाम स्मरण करो; ये तीन साधन करो तो तुम्हें अन्य किसी साधन की आवश्यकता ही न रहे।

१२. अमूल्य मणिक्य मिट्टी में हो क्या, मुकुट में हो तो क्या? हर अवस्था में उसका मूल्य समान होता है। सन्त भी हर अवस्था में जवाहर की तरह चमकते रहते हैं।

१३. पृथ्वी आकाश की ओर आंधी और मिट्टी भेजती है, उसके बदले में आकाश वर्षा करके, उसे आबाद करता है। श्रेष्ठ आदमी दूसरों की बुराई को न देखकर भी उनकी भलाई करते रहते हैं।

१४. जो व्यक्ति शत्रु से मित्र होकर मिलता है, वह धूल से धन बना सकता है।

१५. दुनिया से प्रत्येक खाली हाथों चला जाता है किन्तु जो कुछ दान में दिया जाता है; वही अपने साथ ले जाया जाता है।

१६. दुनिया की इच्छाएं दिल के नेत्रों को ऐसा अंधा बनाती हैं कि सत्यासत्य की समझ निकल जाती है।

१७. अमर वह है, जिसका नेक नाम संसार में गाया जाता है। जिसका नाम प्रकाशित होता है, उस के पीछे दीपक जला तो क्या, यदि न जला तो क्या!

१८. पथ्य सब औषधियों का सार है।

१९. राजा यदि लोभी है तो दरिद्र से दरिद्र है और दरिद्र यदि दिल का उदार है तो राजा से भी सुखी है।

२०. नींद के समय जैसा गरीब, वैसा शाहूकार। अज्ञानी जीवित होते हुए भी मुर्दा है।

२१. मूर्ख जो कुछ सहस्त्र शिक्षाओं से नहीं समझता, वह बुद्धिमान एक संकेत से समझ लेता है। बुद्धि बड़ा पदार्थ है।

२२. थोड़ा बोलना बुद्धिमता का चिन्ह है और बहुत बोलना मूर्खता का चिन्ह है।

२३. लोभ आपदा की खाई है और संतोष आनन्द का कोष।

२४. जहां तक कोई शिक्षा को पसन्द करता है, वहां तक वह भाग्यशाली है।

२५. ऋण है कैंची, जो प्यार के सम्बन्ध को काट देती है।

२६. दिल में दुनिया के विचार कैसे शोभा देंगे? मन्दिर में कचरा शोभा देता है?

२७. प्रत्येक रात की यात्रा की तैयारी दिन को ही कर देता है, वृद्धावस्था की सामग्री भी युवावस्था में ही बनानी चाहिये।

२८. दुनिया की महफिल में जीव ऐसे मूर्ख बन गये हैं, जो उन्हें यह भी पता नहीं लगता कि आतिथ्य करने वाला कौन है और अतिथि कौन?

२९. हे सज्जन! इस संसार रूपी गृह में आतिथ्यकर्त्ता और अतिथि का ज्ञान प्राप्त करो तो तुम्हारे सभी दुख दूर हो जायं।

३०. कभी इस बात का भी तो बैठकर विचार करो कि मैं क्या हूं और जगत् क्या है और उसका रचियता कौन है?

३१. जो शिक्षा पर ध्यान नहीं देता, वह अवश्य दण्ड भोगता है। जो विद्यार्थी शिक्षा से नहीं सुधरता, उसे अध्यापक उचित दण्ड देता है।

३२. सूर्य की किरणें फैलती हैं, उससे पूर्व प्रत्येक नींद से उठ खड़ा होता है। बालों की सफेदी मौत रूपी सूर्य उदय होने का चिन्ह है। अफसोस! अभी तक अज्ञान की नींद से जाग्रत नहीं होती।

३३. भगवान की भलाइयों को याद करके लोगों से भलाई कर।

३४. बुद्धिमान मनुष्य सभी कार्य धैर्य से करता है, क्योंकि धनुष से निकला बाण लौटकर उसमें नहीं आता।

३५. श्री सारक्तावली में लिखा हुआ है कि सागर का अपार पानी किस काम का हुआ, जो प्यास भी नहीं मिटा सकता। कुआं छोटा है, किन्तु उसका पानी प्यास बुझाने के कारण मूल्यवान है। वैसे ही लखपति का धन किस काम का? जिससे किसी की आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती। गरीब का वह थोड़ा पैसा भी अच्छा, जिससे अधीन को सुख मिलता है।

३६. जिसका विचार ठीक नहीं, वह मूर्ख है। जिसकी बात ठीक नहीं, वह पशु है। जिसका चरित्र ठीक नहीं, वह दैत्य है।

३५. सार वचन

१. सभी शास्त्रों की शिक्षा का निचोड़ यह है कि विचार, बात और चाल को वर्तमान के अनुसार रखा जाय।

२. मनुष्य दोषों से भरा पड़ा है, किन्तु अपने को निर्दोष समझने जैसा कोई दोष नहीं है।

३. कोयल के मधुर स्वर का कौए को क्या पता? बुजर्गों की शिक्षाओं की कद्र भी बुजर्ग ही करता है।

४. दुनिया के पेड़ का बीज है विचार। यदि विचार न हो तो दुनिया न हो। विचार को बंद करने से दुनिया का लोप हो जाता है।

५. भिन्न-भिन्न सृष्टि परमात्मा के प्रकाश की भिन्न-भिन्न किरणें हैं। फिर द्वैत की दृष्टि तो बिलकुल निरर्थक है।

६. किसी भी चीज का मोह मनुष्य को अन्धा और बहरा बना देता है।

७. उसका मरना भला है, जो केवल अपने लिए जीता है और जो दूसरों के लिए मरा, वह हमेशा जीवित रहता है।

८. समय अमूल्य है। जो पल गया, वह बादशाही देने से भी लौटकर हाथ नहीं आता।

९. यहां प्रत्येक अपने कर्मों के सूत से स्वयं ही अपने भाग्य का वस्त्र बनाता है।

१०. समय ऐसी चीज है, जो अन्त में सभी बातों को बनाकर ठीक कर देती है। समय के बीत जाने से सभी दर्द और चिन्ताएं स्वयं ही साफ हो जाती हैं।

११. दुख औषधियां हैं, सुख रोग हैं क्योंकि दुख आदमी को नम्र करते हैं और सुख उसे अभिमानी बनाते हैं।

१२. दान देते हुए कोई दरिद्र नहीं होता। कुएं से जितना पानी निकलेगा, उतना स्वच्छ और मीठा होता जाएगा।

१३. कसूर भांपना है कसूर से छुटकारा पाना।

१४. बड़े में बड़ी कला है मन को तत्पर रखना।

१५. बड़े में बड़ी विद्या है अपनी मूर्खता का परिचय।

१६. दिन वह अच्छा, जिस दिन अच्छे काम किये जायं।

१७. भोजन वह अच्छा, जो बांटकर खाया जाय।

१८. दुनिया में हमेशा विद्यार्थी होकर रहो, जो शिक्षक बना, वह विद्या के आनन्द से वंचित रहा।

१९. मूर्ख मनुष्य बुद्धिमानों से कुछ भी प्राप्त नहीं करते परन्तु बुद्धिमान मनुष्य जो सीखे, वह मूर्खों से।

२०. यदि दिल का आनन्द है तो सब काम से आनन्द आता रहेगा। अपने आचार की सुगन्ध से संसार को सुगंधित बनाओ।

२१. जिनको सन्तोष नहीं, वे धनवान भी निर्धन हैं।

२२. जिनको धैर्य नहीं, उन्हें सुख प्राप्त करने की कला नहीं।

२३. सुस्ती सभी पापों की खान, सभी बीमारियों की नींव हैं।

२४. बहुत बोलने से भूलें भी बहुत होती हैं। थोड़ा बोलने से बाद में पछताना नहीं पड़ता।

२५. बहुत सी पुस्तकें पढ़ने से हृदय में प्रकाश नहीं होता, परन्तु एक अक्षर को कमाने से लोक-परलोक का रहस्य खुलता है।

२६. बुद्धिमानों का वचन है कि डरो उनसे; जो तुमसे डरते हैं।

२७. यदि दिल पवित्र (साफ) है तो डर किसका? दिन दहाड़े कोई कभी डरा?

२८. मूर्ख मनुष्य अपना ही शत्रु है तो वह दूसरे किसी का मित्र कैसे हो सकेगा?

२९. धनवान मूर्ख से निर्धन बुद्धिमान अधिक सुखी होता है। बुद्धि न्यूनता को पूर्णता कर देती है।

३०. सत्य हमेशा सरल होता है। सच्ची बात में कोई दांव पेच नहीं होता। न बात लम्बी हो और न बहुत बोलने की आवश्यकता पड़े।

३१. दृष्टि उसकी ठीक कही जाय, जो अपने दोषों को समझ सकता है।

३२. कान उसके ठीक कहे जायं, जो धैर्य से अपनी निन्दा सुन सकता है।

३३. जीभ उसकी ठीक कही जाय, जो अपने दोषों का वर्णन कर सकता है।

३४. हाथ उसके ठीक कहे जायं, जो प्रसन्नता से दूसरों की सेवा करता है।

३५. पैर उसके ठीक कहे जायं, जो प्रसन्नता से परोपकार के लिए चलता है।

३६. क्रोध के पेड़ का बीज है पागलपन और फल है परेशानी।

३७. मूर्ख और बुद्धिमान में यह भेद है, जो मूर्ख चाहता है माल और बुद्धिमान चाहता है कमाल।

३८. बेकारी मुर्दों का शमशान है और कार्य में तत्पर रहना मनुष्य की शान है।

३९. जो स्वयं को स्वामी समझता है, वह नौकर होकर रहता है। सच्चा नौकर ही सच्चा मालिक है।

४०. जिस मनुष्य में शिष्टता नहीं, वह उस प्रकार है, जैसे प्राण रहित शरीर।

४१. नींद आंख से पूछती है कि ए आंख! तुम जो संसार की आंखों की दृष्टा है तो सही बताओ कि मैं क्या हूं?

४२. किसी महापुरुष का वचन है कि जब मैंने फूल तोड़ना छोड़ा, तभी सभी फूल मेरे हो गये। जब स्वाद लेना छोड़ा, तब सभी स्वाद मेरे बन गये।

४३. अनुभवियों से पूछो, न वैद्यों से। क्योंकि अनुभवी की बात वैद्य के विचार से सौ बार अधिक है।

४४. जो तुम में विश्वास नहीं रखता, उसे शिक्षा न दो। श्री गुरु नानकदेव जी ने सच फर्माया है कि:- "भाडा अम्बृत तत डाल" अर्थात् शिक्षा का अमृत भाव के बर्तन में डालो।

४५. बुजुर्ग एक दिल को प्रसन्न करने के लिए सैकड़ों कष्ट सहन करते हैं और एक फूल को बचाने के लिए सैकड़ों कांटे सहन करते हैं।

४६. समस्त आयु की अच्छाई एक बुराई के कारण नष्ट हो जाती है। कदापि नेकी को हाथों से मत त्यागो।

४७. शरीर दुर्बल हो तो परवाह नहीं। किंतु दिल दुर्बल नहीं होना चाहिये।

४८. मिट्टी भी कई कार्य सम्पन्न करती है, फिर यदि तुमसे कोई कार्य सम्पन्न नहीं होता तो तुम मिट्टी से भी गिरे हुए हो।

४९. पेड़ के प्रतिबिम्ब से फल नहीं निकल सकता, वैसे बुराई से भलाई हो नहीं सकती।

५०. अत्याचारी जितना सोया रहे, उतना अच्छा। किसी महापुरुष ने एक अत्याचारी को आशीर्वाद दिया कि सोए रहो।

५१. जो तुम्हारी प्रशंसा करते है, उन्हें मित्र नहीं समझो। मित्र वे हैं, जो तुम्हारी निंदा करते हैं।

५२. जो मेरे मार्ग के कांटे मुझे दिखाता है अर्थात् मुझे मेरे दोष सुनाता है, उसे मैं अपना हितैषी क्यों न समझूं?

५३. "अपने समस्त कार्य परमात्मा को समर्पित करना" महान से महान उद्यम है।

५४. शिष्टता समस्त पृथ्वी की बादशाही से श्रेष्ठ और कुबेर के ख़ज़ाने से अधिक है।

५५. जो शरीर में पुष्ट है, वह जवान मर्द नहीं, परन्तु जो क्रोध को मारता है, वह जवान मर्द है।

५६. धैर्य वह सिद्धि है, जो विष को अमृत बनाती है और वीरान को गुलस्तान।

५७. असंख्य धनवान पुरुष संसार से मरकर चले गये। नाम उसी का अमर रहा, जो धन को अधीनों में बांटकर गया।

५८. बुद्धिमान की एक बात मूर्ख की हजार बातें। एक अमूल्य माणिक्य सहस्र कौड़ियों से अति उत्तम है।

५९. बुद्धिमान मुख को इसलिए बन्द रखते हैं कि देखते हैं कि बेचारे दीपक को जबान से जलाते हैं।

६०. आवश्यकता हमेशा ही है, किन्तु साधन बहुत थोड़े। हे भाई, यदि सच्चा सुख चाहते हो तो आवश्यकताओं को कम करो, फिर कम करो और फिर कम करो।

६१. जब तक शरीर में प्राण हैं, तब तक विचार को ढाढस की आवश्यकता है। तब कहा है कि 'गुर बिना गति नहीं।'

६२. जीवन में प्रत्येक को कोई न कोई आश्रय अवश्य बनाना ही पड़ता है। परमात्मा को अपना आश्रय बनाओ।

६३. सौभाग्यशाली वह है, जो प्रसन्नता से शिक्षा सुनता है। अधिक सौभाग्यशाली वह है, जो उसके अनुसार चलता है।

६४. बुद्धिमान वह है, जो अपनी आरम्भिक लापरवाही (बालपन की पराधीनता) को नहीं भूलता।

६५. सौन्दर्य की वास्तविकता वह है, जो त्वचा उतारने के बाद देखने में आती है।

६६. अभिमान न करो, अन्त में दुनिया को छोड़कर चलना है। अधिकार भेद और आचार विचार को आचरण कहा जाता है अर्थात् छोटे बड़े का विचार रखकर और स्थान स्थान को देखकर और समय समय को पहचानकर कार्य करना चाहिये।

६७. मध्यम चाल सबसे सुरक्षा की चाल है।

६८. आदत जैसी बड़ी फांसी अन्य नहीं, अपनी आदत ही दीन बनाती है और मुश्किल में डालती है।

६९. संसार चक्र से वह स्वतन्त्र है, जो अशुद्ध रिवाजों का आचरण नहीं करता।

७०. जो स्वयं को दुखी नहीं करता, उसे दुखी करने वाला संसार में जन्मा ही नहीं।

७१. यदि अपना विचार दुखी न करे तो दुनिया में अन्य किसी जगह भी दुख है ही नहीं।

७२. जिसको पहचानते हैं, उससे ही मिलते जुलते हैं (पहचान=ज्ञान) ज्ञान ही मिलाप है, ज्ञान ही वियोग है।

७३. वीर वह है, जो अपनी निन्दा सुनकर तत्काल भुला देता है।

७४. "न दुखाओ, न दुखी हों।" यह अन्य पर निर्भर नहीं है किन्तु स्वयं पर।

७५. समय का सरूप क्या है, एक क्षण। क्योंकि सभी काम एक क्षण में सम्पन्न होते हैं।

७६. सब सम्बन्ध किस पर खड़े हैं? विश्वास पर।

७७. शरीर का रोम-रोम ज्ञान का नेत्र है, क्योंकि त्वचा सहित सभी इन्द्रियों से केवल ज्ञान झलक रहा है। मरने के पश्चात् भी शरीर से अनन्त जीव जन्तु आकर निकलते हैं।

७८. कर्म से पहले ज्ञान है। दर्जी, बढ़ई आदि कारीगर जो काम करते हैं, उससे पहले उस विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। पहले जाना जाता है, फिर कुछ किया जाता है।

७९. समय किसी का भी मित्र नहीं। (जमाना किसी का भी मित्र नहीं) नदी की अवस्था को देखो, गर्मी के दिनों में पूर्ण युवावस्था थी। कुछ समय ही बीता तो सर्दी में उतरकर बहुत नीचे हो गई।

हे बुद्धिमान! समय पर कोई विश्वास न करो। यह नदी से ही मित्रता नहीं निभाता, फिर तुम कौन हो?

८०. यदि चाहो कि परमात्मा तुम्हारे अपराध क्षमा करे तो तुम दूसरे का अपराध क्षमा करो।

८१. वास्तविकता क्या है? ज्ञान। स्थूल शरीर से भी ज्ञान के अलावा कोई भी कार्य नहीं होता।

८२. वास्तविक ग्रन्थ है अनुभव का ग्रन्थ। सब ग्रन्थ उससे निकलते हैं। जिसने यह पुस्तक पढ़ी, उसे अन्य किसी पुस्तक के पढ़ने की आवश्यकता नहीं।

८३. अनुभव वह वस्तु है, जो सभी कर्मों और संकल्पों से पहले ही सिद्ध है।

८४. अनेक बातें, अनेक मत, अनेक पुस्तकें, अनेक विचार मनुष्य के मन को स्थिर होने कैसे दें? विश्वास के अलावा मन स्थिर होने का ही नहीं।

८५. वाणी ज्ञान प्रदान करने वाली है। बुद्धि विचित्र प्रकाश है और विस्मृति आनन्ददायक है।

८६. ज़माने के परिवर्तन पर रोना नहीं चाहिये परन्तु जो दिल रोता है, उसकी दुर्बलता पर रोना चाहिये।

८७. कस्तूरी का एक कण मिट्टी के ढेर से हजार बार श्रेष्ठ है। वैसे अनुभव का एक अक्षर व्यर्थ बकवास से बहुत मूल्यवान है।

३६. आत्म ज्ञान

१. आत्म अर्थात् स्वयं और ज्ञान अर्थात् समझ। आत्म ज्ञान का अर्थ हुआ अपने स्वरूप की समझ। जिसने अपने को पहचाना उसने परमात्मा को पहचाना।

२. गुरु नानकदेव जी ने फर्माया है कि "हउमै दीर्घ रोग, है दारूं भी इस मांहि।" आपा अर्थात् अभिमान बड़ी बीमारी है, परन्तु यदि किसी को आप (स्वयं) का ज्ञान हो जाय तो उसका अभिमान का रोग उत्तर जाय।

३. यह दुनिया परमात्मा की रास लीला है, किन्तु वह विचित्र लीला केवल उन्हें ही दृष्टिगोचर होती है, जो अभिमान से रहित हैं।

४. अवस्थाओं को परिवर्तित करने से अथवा स्थानों को बदलने से सुख प्राप्त नहीं किया जा सकता। जिसमें से अभिमान निकल गया है, वह प्रत्येक अवस्था में और प्रत्येक स्थान में प्रसन्न है।

५. मन का स्वभाव है कि वह बंदर की तरह भटकता रहता है परन्तु हे भाई! तुम्हें तो पता है, कि तुम मन नहीं हो किन्तु मन से न्यारे मन को जानने वाले हो। न्यारा होकर मन की ओर देखो तो तत्काल यह बन्दर तुम्हारा आज्ञाकारी दास हो जाय।

६. आयु के कारण शरीर परिवर्तित होता है, संग के कारण विचार बदलते रहते हैं। अवस्थाओं के कारण निश्चय परिवर्तित होते हैं परन्तु "मैं बदल कर कोई अन्य वस्तु हो गया हूं" यह विचार तो किसी को स्वप्न में भी नहीं आता। इससे प्रकट है कि आत्मा हमेशा एकरस है।

७. संसार है तमाशा और मैं हूं उसको देखने वाला। भला देखने वाले को तमाशे से कैसा कष्ट?

८. यदि सभी अवस्थाओं को देखने वाले ही रहो तो तुम्हें कोई दुख दर्द न हो।

९. दुनिया के बाजार में प्रत्येक किसी न किसी वस्तु की ओर आश्चर्य से देख रहा है परन्तु मैं इस आश्चर्य में हूं कि "यह देखने वाला कौन है?"

१०. ज्ञानी और अज्ञानी का भेद यह है कि अज्ञानी अपने को इस तमाशे का कर्त्ता मानता है। ज्ञानी अपने को इस तमाशे को देखने वाला मानता है।

११. दुनिया के सौन्दर्य को देखकर मुझे परमात्मा के सौन्दर्य की ऐसी याद आई है कि मुझसे दुनिया का सौन्दर्य भूल गया।

१२. महान से महान तीर्थ वह है, जो इन्द्रियों के मार्गों को रोककर दिल के दरिया में डुबकी लगाए।

१३. यदि तुम्हें परमात्मा का दर्शन चाहिये तो दुनिया के दर्शन से आंखें मूंद लो। यदि परमात्मा की आवाज़ सुनना चाहो तो अन्य सभी आवाज़ों से कानों में कपास डाल दो।

१४. आत्मा ऐसी विलक्षण वस्तु है, जिसे पकड़ा नहीं जा सकता। जो पकड़ा जाता है, वह अनात्मा है और जो उसे पकड़ता है, वह है आत्मा। गोपियां कृष्ण को पकड़ नहीं सकतीं, क्योंकि वह स्वयं पकड़ने वाला था।

१५. यदि अपने प्रियतम को दिल में देख लो तो तुम्हारा शरीर ही मन्दिर बन जाय।

१६. जब मैंने प्रियतम को दिल में देखा, तब मुझे आनन्द मिला। जब प्यारे को मैंने अन्दर में देखा तब समस्त खोज और चिन्ता से मुक्त हो गया।

१७. जिसे मैं सारी आयु बाहर खोज रहा था, वह आखिर मैंने देखा कि दिल के भीतर बैठा है।

१८. यदि तुम्हें परमात्मा के दर्शन की अभिलाषा हो तो दुनिया की कोई भी इच्छा दिल में न रखो।

१९. दुनिया का सौन्दर्य तुम्हारे स्वरूप के सौन्दर्य का एक कण है। यदि अपने सौन्दर्य को देखो तो अन्य समस्त सौन्दर्य तुम से भूल जायं।

२०. जीव तो प्रसन्नता का पारस है, जिसे भी यह स्पर्श करता है, वह प्रसन्नता का कोष बन जाता है अर्थात् जीव को खुशी उनसे ही मिलती है, जिन्हें अपना समझता है।

२१. 'स्व' को भुलाने से दुनिया याद आती रहती है। यदि 'स्व' में मग्न रहा जाय तो दुनिया की स्मृति भी न हो।

२२. यदि जीव अपने में प्रसन्न रहे तो उसे अन्य कोई खुशी, विचार में भी न आवे।

२३. प्रसन्नताएं हैं तो सब अपने लिए, फिर जब हमें 'स्वयं' प्राप्त है, तब खुशियों की क्या परवाह! हे सज्जन, बाहरी खुशियों से दृष्टि हटाओ तो हमेशा प्रसन्न रहो।

२४. सुषप्ति से बदलकर जाग्रत होती है, जाग्रत से परिवर्तित होकर सुषप्ति होती है, किन्तु "मैं" दोनों अवस्थाओं में एक जैसा ही हूं।

२५. ऐसी कोई वस्तु ही नहीं, जिसमें "मैं" न हो, जड़ वस्तुएं भी यदि बोलतीं तो कहतीं कि 'मैं'। इस प्रकार खण्ड ब्रह्माण्ड, लोक परलोक सब 'मैं' रूप हैं। 'मैं' से बाहर कुछ भी नहीं। इस 'मैं' को सर्व-व्यापी आत्मा कहते हैं।

२६. जो 'मैं' समझकर 'मैं' में मग्न रहता है, उसमें 'मैं' बिल्कुल नहीं रहती।

२७. 'मैं' अपने से बाहर जाऊं तो कहां जाऊं? जहां जाऊंगा वहां 'मैं' तो अवश्य उपस्थित रहूंगा।

२८. 'स्वयं' ऐसी विचित्र वस्तु है, जो उसके ऊपर कोई भी हाथ रखकर कह नहीं सकता कि "यह स्वयं है।" क्योंकि जब तक 'यह' कहता रहेगा, तब तक कहने वाला तो न्यारा होकर खड़ा रहेगा।

२९. जैसे मैं चीज़ों को समझता हूं, वैसे सब चीजें दृष्टिगोचर होती हैं। जैसे मैं विचार करता हूं, वैसे मुझे सब प्रतीत होता है।

३०. यदि दिल की आंख को विशाल करो तो बूंद में दरिया देख सको और कण में ढेर।

३१. अभिमान तब होता है, जब स्वयं को सीमित समझा जाता है। यदि अपने को असीम समझा जाय तो खुदी किसकी?

३२. देखने वाले को कौन देखे, जानने वाले को कौन जाने?

३३. अपने प्यारे को मैंने कहा कि तुम्हारे दर्शन की मुझे बहुत प्यास है। उसने कहा कि अपने आपको देखो तो तुम्हारी यह प्यास बुझे।

३४. मैंने उससे कहा कि मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम्हारे पास बैठा रहूं। उसने कहा कि स्वयं के साथ जाकर बैठो तो तुम्हारी कामना पूर्ण हो।

३५. परमात्मा को देखना चाहो तो स्वयं को देखो क्योंकि जिसने अपने आपको पहचाना, उसने परमात्मा को पहचाना।

३६. बुदबुदा और दरिया, फूल और बाग, दाना और ढेर, किरन और सूर्य कभी एक दूसरे से अलग हुए? इस प्रकार जीव भी ईश्वर रूप है।

३७. जिसको इच्छा नहीं, वह बाहर भटके तो किसके लिए? जो अपने में मग्न है, वह अन्य किसी खुशी के लिए क्यों ताके?

३८. जब मैंने देखना छोड़ा, तब तीनों लोक मुझे देखने में आये। जब मैंने स्वाद छोड़ा, तब मुझे छत्तीस अमृत प्राप्त हुए।

३९. घास का एक एक तिनका, पेड़ का एक एक पत्ता, बालू का एक एक कण एकता का संकेत दे रहा है क्योंकि पत्ते पत्ते का रूप न्यारा और कण कण का चित्र अनुपम है।

४०. देश, काल और वस्तु के परिवर्तन में 'मैं' नहीं फिरता, फिर परिवर्तन किसका?

४१. महापुरुष का वचन है कि कोई किसी विचार में मस्त होकर बैठा है, कोई फिर किसी बात में मस्त है; कोई किसी माल में मस्त है तो कोई किसी चाल में मस्त है। ये सभी झूठी मस्तियां हैं। मस्ती वह जो स्वयं में मस्त रहा जाय।

४२. कैसी शोभा, कैसा प्रेम, कैसा आशिक (प्रेमी), कैसा माशूक (प्रिय), कैसा दिलबर, कैसा नूर, कैसी नज़र! सब तुम्हारी ज्योति का चमत्कार है।

४३. माशूक (प्रिय) पर प्रत्येक मोहित होता है परन्तु जब कोई मोहित होने वाले पर मोहित हो।

४४. सभी प्राणियों की आंखें केवल देखने का कार्य करती हैं। अतः सब आंखें मिलकर केवल एक हैं, सभी प्राणियों के कान केवल सुनने का काम करते हैं, अतः सभी कान मिल कर केवल एक हैं। इस प्रकार हाथ भी एक हैं और पैर भी एक हैं और मुख भी एक हैं और शरीर भी एक हैं। इस शरीर को ईश्वर कहा जाता है।

४५. जैसे सुगंध के सिवाय पुष्प, जैसे प्राण बिना शरीर, जैसे प्रकाश रहित नेत्र, जैसे जल बिना तालाब, जैसे जल के सिवाय मछली, जैसे चांद के बिना चातक, जैसे स्वामी रहित घर, वैसे ज्ञान रहित मनुष्य।

४६. स्वर्ण (सोने) से बना हुआ दीपक, कस्तूरी के तेल भरा हुआ, रेशम की बाती से बना हुआ हो तो भी यदि उसमें प्रकाश नहीं हो तो मिट्टी के रोशन दीपक के सामने तुच्छ है। इस प्रकार ज्ञान के प्रकाश के अलावा विद्या, बुद्धि पद और पदार्थ सोने के दीपक की तरह व्यर्थ हैं।

४७. आत्म भोजन वह है, जो प्रत्येक देश, प्रत्येक काल और प्रत्येक वस्तु में 'स्वयं' को अपरिवर्तित समझे। हमेशा और सर्वत्र अपने में मग्न रहे।

४८. हे भाई, मजा जो है, वह अपने भीतर। भला थोड़ा विचार करके देखो, दिलबर अपने दिल का होता है, दृष्टि अपने ही नेत्रों की होती है, रस अपनी ही जबान से आता है और अपने ही विचार के अनुसार प्रत्येक वस्तु से प्रसन्नता प्राप्त होती है। तब मजा तो अपने में ही हुआ।

४९. हे मानव फूल, तुम्हारा जीवन पवित्रता, प्रेम और ज्ञान का उद्यान है। स्वयं को पहचानो। जिसने थोड़ी भी यह विद्या प्राप्त की है, उसने अमर जीवन का आनन्द पाया है।

५०. जो दूसरे से प्रेम करता है, उसे अज्ञानी कहा जाता है। जो अपने से प्रेम करता है, वह ज्ञानी है।

५१. सबसे प्रिय कौन है? 'स्वयं'

'स्वयं' से ऊपर भी कोई प्यारा है? नहीं कदापि नहीं। तब क्यों न स्वयं से प्रेम करके हमेशा अपने में मग्न रहा जाय।

५२. हे मनुष्य, जिसकी आज्ञा से तुम बाहर नहीं जा सकते, वह तो तुम्हारे में विद्यमान है।

प्रश्न :– जिसकी आज्ञा का अनुगमन अत्यन्त प्रेम से किया जाता है, वह कौन है? जिस की आज्ञा बादशाहों की आज्ञा से अधिक मानी जाती है, वह कौन है? जिसका कहना अत्यन्त प्रेम से माना जाता है, वह कौन है? आज तक उसकी कोई भी आज्ञा तोड़ी न गई है, वह कौन है? जिसकी आज्ञा इसके पश्चात् भी कोई तोड़ने में समर्थ नहीं है, वह कौन है?

उत्तर :– आत्मा, जो भीतर से आज्ञा देता है। उसकी आज्ञा के समक्ष पीर, बुजर्ग, गुरु, बादशाह आदि की आज्ञा भी तुच्छ है। उसकी आज्ञा के पालन में जान बलिदान करना एक साधारण कार्य है।

५३. भीतर वाले अन्तर्यामी को पहचान। तुम वह ज्ञान हो, जिसके ज्ञान से बाहर अन्य कोई भी ज्ञान नहीं।

५४. जिस ज्ञान को जानकर, बाद में दूसरों का ज्ञान होता है, उस ज्ञान को पहचान तो अन्य कुछ जानने की आवश्यकता तुम्हें न हो।

५५. फूल ने कभी किसी से सुगंध मांगी? सूर्य ने कभी किसी से प्रकाश उधार लिया? फिर तुम दूसरी वस्तुओं की ओर क्यों ताकते हो? हे मानवीय फूल, अपने सौन्दर्य पर स्वयं मोहित होकर रहो तो संसार तुम्हारे सौन्दर्य पर मोहित हो।

३७. बेख़बरी

१. असली वास्तविकता की जानकारी को कहा जाता है बेख़बरी।

२. लोग ख़बर चाहते हैं परन्तु मैं बेख़बरी चाहता हूं।

३. परमात्मा का अन्त कौन पा सकता है? जानकारी। उसके निकट पहुंचते ही अपने आपको गंवाकर बेख़बरी में व्याप्त हो जाती है।

४. बेख़बरी की नींव ऐसी तो दृढ़ है कि आदि से बेख़बरी स्थित है और अन्त के पश्चात् भी बेख़बरी ही रहेगी।

५. बेखबरी एक असीम समुद्र है, खबरें हैं उसके सतह की लहरें और बुदबुदे।

६. वास्तव में तो है ही बेखबरी। खबर तो केवल मानवीय विचार है।

७. मन, चित्त और वाणी जहां पहुंचकर खबर रहित हो जाते हैं, बुद्धि जहां पहुंचकर पीछे लौट जाती है। उस परम पद को बेखबरी अथवा बेअन्त पद का नाम दिया गया है।

८. वास्तव में कोई भी खबर किसी को पड़ नहीं सकती, क्योंकि प्रकृति का सारा कारखाना मनुष्य के ज्ञान से ऊपर है।

९. अपने शरीर में रक्त कैसे बनता है? नाड़ियां क्या करती हैं? प्राण कैसे चलते हैं? भोजन से शक्ति किस समय मिलती है और शरीर में क्या-क्या हो रहा है? अपने शरीर की ही खबर नहीं पड़ती तो फिर अन्य किसी वस्तु की कौन सी खबर पड़ सकेगी?

१०. जानकारी अच्छी चीज है परन्तु जानकारी की उलझन में रहना खराब है क्योंकि खबर का अन्त ही नहीं है।

११. खबर का अन्त है बेखबरी। जिसे सब खबर हो जाती है, वह खबर रहित होकर जीवन बिताता है।

१२. यदि चाहो कि मुझे सब खबर प्राप्त हो तो खबर रहित होकर रहो।

१३. अन्य सब सृष्टि खबर के खयाल से रहित है, केवल मनुष्य खबर की उलझन के कारण खराब और निन्दनीय है।

१४. कोई भी वस्तु ऐसी नहीं, जिसके विषय में पूर्ण खबर पड़ सके। तुच्छ से तुच्छ वस्तु के सभी गुणों से भी कोई परिचित नहीं है और न हो सकता है।

१५. बेखबरी की आखें खोलकर चारों ओर देखो तो आश्चर्य का तमाशा देखो।

१६. बालक क्यों प्यारा लगता है? क्योंकि खबर रहित है। जितनी झूठी खबर किसी को अधिक है, उतना उससे लोग डरते हैं और उसके साथ भेदभाव रखते हैं।

१७. बालक की तरह दुनिया से बेखबर बनो तो तुम्हें परमात्मा का पता लगे, क्योंकि दुनिया से खबर रहित होना ही परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करना।

१८. दुनिया में केवल यही एक सच्ची खबर है कि दुनिया की सभी खबरें झूठी हैं। यह खबर पूर्णतः मृत्यु के समय ही पड़ती है।

१९. सूर्य, चन्द्रमा, तारों, पृथ्वी, वायु, नदियों, पहाड़ों और आकाश से मौन के अलावा कुछ भी जानकारी नहीं मिलती। संसार के प्राचीन से प्राचीन निवासी तो ये हैं किन्तु अपने तथा पराये के हाल से बेखबर हैं।

२०. बेखबरी जैसी अन्य जानकारी नहीं है, क्योंकि सब वस्तुओं का अन्त बेखबरी है।

२१. जो हमने पहले सुना था, वह आज सपना हो गया। जो आज सुनते हैं, वह भी अन्त में सपना हो जाएगा।

२२. संसार से अनभिज्ञता एक बगीचा है और बेखबरी उसकी बहार है। जो उसी बगीचे में रहता है, उसे स्वर्ग की क्या आवश्यकता?

२३. जन्म से पूर्व बेखबरी है, मृत्यु के पश्चात् भी बेखबरी है। केवल बीच में यह शोर कोलाहल नींद रहित न हुआ तो क्या हुआ?

२४. सच्चा जानकार वह है, जो जानकारी होते हुए भी अन्जान होकर रहता है।

२५. खबर की उलझन से रहित हो तो बेखुद हो सको, क्योंकि बेखुदी के नशे का शत्रु खबर है।

२६. खबर से अन्जान होना भी कठिन है किन्तु बेखबरी से अन्जान होना भी कठिन से कठिन है।

२७. खबर से अन्जान होने से मोक्ष मिलता है परन्तु बेखबरी से अन्जान होने से पूर्ण पद प्राप्त होता है।

२८. पानी जो हम पीते हैं, वायु जो सांस द्वारा लेते हैं, वह सहस्त्रों कीटाणुओं से भरी पड़ी है। इस बात से हम अन्जान हैं, तब कोई एतराज नहीं होता नहीं तो भ्रम में ही मर जायं।

२९. एक बार जो खबर पड़ जाती है, उससे जान छुड़ाना कठिन हो जाती है और जिसकी खबर नहीं है, उससे हमेशा स्वतन्त्र हैं।

३०. खबर मनुष्य का मार्ग रोशन कर देती है किन्तु बेखबरी वह प्रकाश है, जो दूसरे प्रकाश की आवश्यकता ही मिटा देती है।

३१. खबर प्राप्त करना भी साहस का काम है किन्तु स्वयं को बिल्कुल अन्जान रखना बड़ी से बड़ी वीरता है।

३२. दुनिया बेखबरी का बगीचा है। मनुष्य है बेखबरी के बगीचे का फूल।

३३. मनुष्यों की खोपड़ी तो खबरों से भरी पड़ी है, यदि फोड़कर उसे देखा जाय तो उसमें है कुछ भी नहीं।

३४. एक महापुरुष का वचन है कि मृत्यु के समय जाकर मुझे खबर पड़ी कि जो भी संसार में देखा, वह सब स्वप्न था; जो भी मैंने सुना, वह सब झूठ।

३५. न देखना, सबसे अधिक देखना है।

३६. असल चीज तो है 'स्वयं'। यह वह चीज है जो न किसी ने देखी है और न कोई देख सकता है, क्योंकि देखने वाले को ही 'स्वयं' कहा जाता है।

३७. जब 'स्वयं' को ही नहीं देखा, तब दूसरे को देखने से क्या हुआ? शोक! मनुष्य तो स्वयं को समझा ही नहीं, किन्तु दूसरों को समझने की उलझन में लगा हुआ है।

३८. मन से स्वार्थ को मिटा दो। अब जो देखते हो, वह हरि दर्शन है। जो सुनते हो, वह अनाहद शब्द है। जो बोलते हो, वह ब्रह्म वाणी है।

३९. प्रत्येक बुद्धिमान के सामने मूर्ख और प्रत्येक मूर्ख के सामने अधिक मूर्ख बनकर खड़े रहो। फिर देखो तो मिलन में कैसा न मजा है।

४०. मैंने पूछा कि मनुष्य क्या है? उत्तर मिला कि 'कान' क्योंकि कानों द्वारा मनुष्य जो सुनता है, वही उसके दिल पर संस्कार रूप होकर चित्रित हो जाता है। फिर ऐसे ही विचार उसमें उगते हैं, ऐसी ही बातें करता है, वही आचरण करता है और वैसी ही दृष्टि से सब कुछ देखता है। तब हे भ्राता, कानों को संभालकर काम में लाओ। ऐसी बातों और शब्दों को सुनने से कानों को बन्द रखो, जो जीवन के बगीचे को कांटों का बनाते हैं।

४१. नींद तन मन की थकावट उतारकर आराम देती है, वह इसलिए कि नींद में मनुष्य बेखबर होकर पड़ जाता है। बेखबरी आराम की शय्या है।

३८. विस्मृति

१. विचार से विचार रहित होने को कहा जाता है विस्मृति। हे भाई, विस्मृति दिल के सभी दर्दों की अचूक दवा है।

२. दुख तब होता है, जब बीती बात याद आती है अथवा आगामी बात की चिन्ता होती है। यदि दोनों भूल जायं तो सर्व आनन्द है।

३. जिसमें अभिमान नहीं है, वह सब ख्याल करते हुए भी हमेशा ख्याल से रहित है।

४. नींद मनुष्य की थकावटें मिटाती है क्योंकि नींद में सब कुछ भूल जाता है। जिसको भुलाने की विद्या आती है, वह हमेशा प्रसन्न रहता है। सुख से नींद वह करेगा, जो सभी कुछ भुलाकर सोएगा।

५. दुनिया की बातें कितनी गिनकर, कितनी गिनोगे? आखिर तो सब भूल जानी हैं।

६. कहते हैं कि मृत्यु के समय जो याद आएगा उसके अनुसार नर्क अथवा स्वर्ग मिलेगा; परन्तु यदि कुछ याद न आया तो मोक्ष।

७. ईर्ष्या, चिढ़, वैर, जलन, क्रोध आदि का अचूक उपचार है विस्मृति। सचमुच ख्याल की सभी खराबियों का उपचार और शरीर के रोगों का असली साधन है विस्मृति।

८. दूसरे के कठोर वचन के वार को विस्मृति की ढाल पर रोको तो बिल्कुल प्रभाव रहित हो जाएगा।

९. प्रत्येक ख्याल उठाने से मनुष्य पागल हो जाता है। विस्मृति वह विद्या है, जो मस्तिष्क को हमेशा पुर रखती है।

१०. स्मृति बन्धन है और विस्मृति है मोक्ष। हर बात, विद्या, कला आदि की उन्नति का चिन्ह है विस्मृति।

११. कवि तब उन्नति का वचन लिखता है, जब विस्मृति की खुमारी में आता है। विज्ञानी खोज में तब कमाल करता है, जब विस्मृति के आनन्द में मग्न होता है।

१२. लोक बातों का स्मरण करना चाहते हैं किन्तु मैं चाहता हूं भुलाना। जितना किसी ने स्मरण किया, उतना परेशान हुआ। जितना किसी ने भुलाया उतना उसे आनन्द मिला। प्रत्येक बात आखिर भूल जाएगी और प्रत्येक अवस्था आखिर बीत जाएगी।

१३. स्मृति है वियोग और विस्मृति है संयोग। जो याद पड़ता है, उससे वियोग का भ्रम जाग्रत होता है। जो स्मरण नहीं किया जाता, वह मानो है ही नहीं।

१४. प्रत्येक बात, प्रत्येक चाल, प्रत्येक हाल, प्रत्येक विचार जिस समय हो, उस समय उससे काम निकालकर तत्काल भुला दो तो दूसरे पल में फिर नये का नया हो जाओ।

१५. हे बुद्धिमान ! दुख देने वाली बातों को भुला दो, सुख देने वाली बातों का स्मरण करो। उस सुख को स्मरण करो, जिससे भूलकर भी दुख न मिले।

१६. विस्मृति की चादर पहनकर संसार का भ्रमण करो, सब करते हुए भी इस चादर की बरकत से तुम्हें कोई लेप न लगेगा।

१७. समय के बीतने का स्मरण मनुष्य को दुर्बल बनाता है, यदि समय को भुला दो तो हमेशा युवक रहो।

१८. ए एश्वर्य का प्रेमी, मतवाला होकर विस्मृति रूपी अप्सरा को सीने से लगाओ। उसके सीने से लगाने में दुख दूर और थकावटें नष्ट हो जाती हैं। यह वह कामिनी है, जो भोग की बीमारियों को समाप्त कर देती है।

१९. हे भाई, जागते हुए नींद के आनन्द भोगने की कला प्राप्त करो। पूर्ण पुरुष वह है, जो जागते हुए भी मन पर नींद की अवस्था चालू कर सकता है।

२०. वाह विस्मृति का आनन्द ! अर्थ में यही अमृत है, परमार्थ में यही परम पद है।

सारे दिन का रहन-सहन

१ ब्रह्म मुहूर्त है निर्मल,
मन होता है तब कोमल।

१. सब कुछ उस समय है शान्त,
फैला हर जगह है एकान्त।

२. सवेरे प्रभात को उठकर तुम,
प्रभु से मांगो शुभ आशीर्वाद।

३. शौच करके करो दांतुन स्नान,
इष्ट गुरु का बैठकर धरो ध्यान।

४. निर्भय होकर जपो ओ३म् मन्त्र,
तुरंत मन हो जाए शुद्ध व स्थिर।

५. गुरबानी का करो विचार,
अनुभव होवे जैसे आत्म सार।

६. नियम अपने में रहो हमेशा पूर्ण,
कभी मत हो उस काम में झूठे।

७. प्रभु से मांगो हमेशा आशीर्वाद,
मधुर ज़बान की दो बख्शीश।

८. माता पिता को सिर झुकाओ,
सब आशीर्वाद उनके पाओ।

९. नियम यह रोज पालो अपना,
शान्त रह कर करो अपना धन्धा।

१०. श्रम, हुनर, नौकरी, व्यापार,
सब में सच्चाई नित्य धारो।

११. जीत अपनी अगर तुम चाहते हो,
बोलो मीठा, सच बोलो हमेशा।

१२. समझो सबको मालिक की सूरत,
करनी अपनी में रखो नित्य निम्रता।

१३. आदर, स्नेह से मीठा बोलो,
कभी न किसी के मन को सताओ।

१४. इज्जत से बोलो आप सभी को,
इज्जत दो खुद छोटों को।

१५. सबसे रखो हर समय प्यार,
पापी समझकर न किसी को फटकारो।

१६. हाथ जोड़कर तुम मिलो सबसे,
पांव छू नित्य अपने से बड़ों के।

१७. किसी से कुछ जब बोलो,
एहसान उसके मानो हमेशा।

१८. समय देकर जो तुम्हारे पास आए,
आदर भाव से रखो उसकी राय।

१९. पवित्रता से दिन गुज़ारो,
हृदय सबके बार बार प्रसन्न करो।

२०. सत्संग में स्थिर होकर बैठो,
याद न करो मन, इन्द्रियां, देह।

२१. वचनों में धरो सारा ध्यान,
बसे अन्दर परमात्मा का ज्ञान।

२२. ठाकुर समझो सब घर के सदस्य,
शेवा में करो सफल जीवन।

२३. परमात्मा की रहो नित्य गोद में,
समचित् रहो सुख और दुख में।

२४. कार्य अपना करो ऐसे पूरा,
मोहित "बोध" होवे जगत सारा।